RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15

अंक : 316

दि. 20.03.2026,

शुक्रवार

पाना : 04

किंमत : 00.50 पैसा

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की गरिमामय वर्चुअल उपस्थिति में पोरबंदर जिले के 413.81 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की वर्चुअली अध्यक्षता में गुरुवार को पोरबंदर शहर के ताजावाला हॉल में विभिन्न विकास कार्यों के शिलान्यास व लोकार्पण का समारोह आयोजित हुआ। मुख्यमंत्री ने इस कार्यक्रम में वर्चुअल माध्यम से जुड़कर पोरबंदर जिले के नागरिकों को कुल 413.81 करोड़ रुपए से अधिक की लागत के लगभग 46 विकास कार्यों की भेंट दी। इन परियोजनाओं के अंतर्गत लगभग 329.59 करोड़ रुपए की लागत से होने वाले 17 विकास कार्यों का ई-शिलान्यास तथा 93.22 करोड़ रुपए की लागत से पूर्ण हुए 29 विकास कार्यों का ई-लोकार्पण किया गया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने पोरबंदर जिले के नागरिकों को वीडियो के माध्यम से शुभकामना प्रेषित कर 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र को सार्थक करने वाली विकास परियोजनाओं की भेंट दी। इस अवसर पर श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में समग्र राज्य में शहरी सुविधा के सर्वांगीण विकास कार्य तेज गति से किए जा रहे हैं। इस कड़ी में आगे बढ़ते हुए पोरबंदर नगर पालिका को महानगर पालिका का दर्जा देकर उसके आधुनिकीकरण के लिए लगभग 291 करोड़ रुपए की बड़ी राशि आवंटित की गई है। समग्र जिले के लिए कुल 414 करोड़ रुपए से अधिक के विकासोन्मुखी कार्यों का आयोजन किया गया है।

> **वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया**
>
> ▶▶ हम पोरबंदर को विकास की दृष्टि से एक मॉडल जिला बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और सरकार सभी विकास कार्यों के गुणवत्तायुक्त होने के प्रति सतर्क है
>
> ▶▶ मुख्यमंत्री के करकमलों से शिलान्यास के साथ 20 करोड़ रुपए की लागत से तैयार होने वाला 'सौंदर्य वन' प्रोजेक्ट पोरबंदर को पर्यावरण एवं पर्यटन क्षेत्र में नई पहचान दिलाएगा

उन्होंने कहा कि इस विकास यात्रा में सरकार का केवल भौतिक अवसंरचना के निर्माण का ही नहीं; अपितु 'सर्वोदय वन' तथा 'मोकर सागर वेटलैंड' जैसी परियोजनाओं द्वारा इको-टूरिज्म को भी गति देने का संकल्प है। इसके अतिरिक्त; ग्रामीण क्षेत्रों में पुनर्गठित वितरण क्षेत्र योजना (आरडीएसएस) अंतर्गत 20 करोड़ रुपए की लागत से विद्युत सुविधाएँ सुदृढ़ की गई हैं और युवाओं के कौशलवर्धन के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में नए भवनों का निर्माण भी किया गया है।

मुख्यमंत्री ने सांस्कृतिक दृष्टि से पोरबंदर के महत्व को उजागर करते हुए कहा कि आगामी रामनवमी से शुरू होने वाला माधवपुर का मेला केवल एक उत्सव नहीं है, बल्कि भगवान श्री कृष्ण एवं रुक्मिणीजी के विवाह प्रसंग द्वारा पश्चिम भारत तथा उत्तर-पूर्वी भारत के राज्यों को जोड़ने वाला 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का अटूट सेतु है। राज्य सरकार पूज्य गांधी बापू की इस जन्मभूमि पर स्वच्छता एवं सेवा के मूल्यों के साथ वर्ष 2047 तक 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने के लिए दृढ़ है। श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि सरकार के सुदृढ़ वित्तीय प्रबंधन के चलते विकास के कार्यों के सरकार के पास धन की कोई कमी नहीं है। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि वे इस विकास यात्रा में सहभागी हों और विकसित गुजरात के लिए पोरबंदर को लीड लेने वाला महानगर बनाएँ। उन्होंने पोरबंदर में नए बनने जा रहे सांस्कृतिक वन के संदर्भ में कहा कि संयोग से वन मंत्री भी पोरबंदर के हैं और उनके समन्वय में हो रहे वन एवं पर्यावरण के तथा बरडा डुंगर (पर्वत) व इस क्षेत्र के पर्यावरणोन्मुखी विकास कार्यों से इस जिले का विकास पर्यावरण के संतुलन के साथ आगे बढ़ेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि महात्मा गांधी की जन्मभूमि तथा सुदामा की नगरी पोरबंदर में भव्य सांस्कृतिक विरासतें हैं। उनके महत्व को ध्यान में रखकर राज्य सरकार ने पोरबंदर जिले के सर्वांगीण विकास के लिए श्रृंखलाबद्ध आयोजन किया है। राज्य सरकार ने पोरबंदर जिले में पिछले 5 वर्षों में 2100 करोड़ रुपए के कार्य किए हैं।

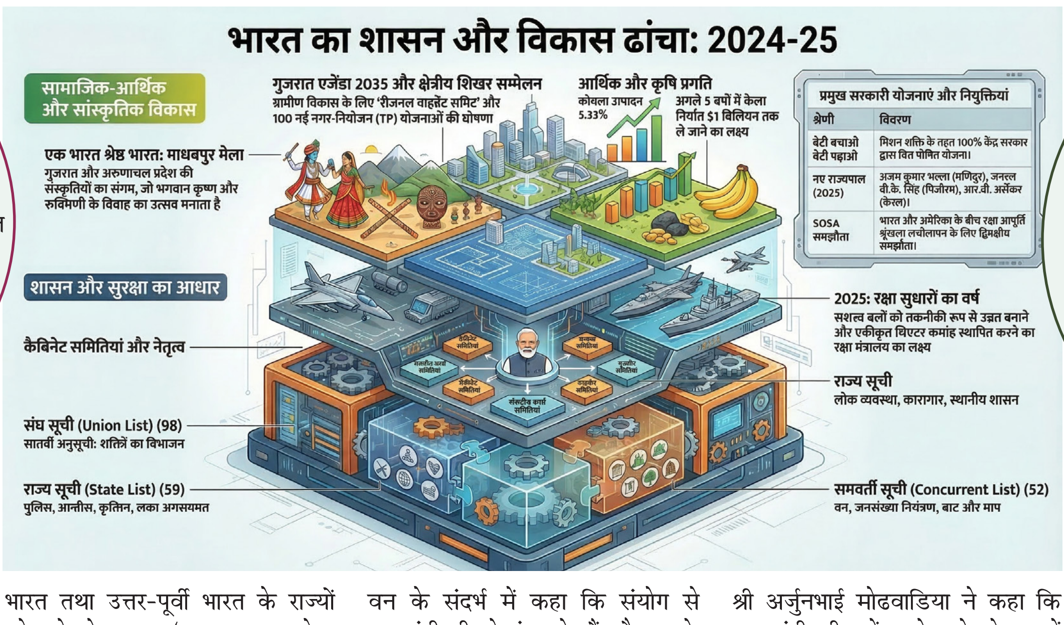

इस अवसर पर वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार पोरबंदर जिले के सर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध है।

श्री मोढवाडिया ने विशेष संज्ञान लिया कि पोरबंदर शहर में आधुनिक सुविधाओं के लिए भारी धन राशि आवंटित की गई है; जिसमें स्ट्रीट लाइट के लिए 55 करोड़ रुपए, छाया आइकॉनिक रोड के लिए 16 करोड़ रुपए तथा ऐतिहासिक लाइब्रेरी के हेरिटेज रीस्टोरेशन के लिए 5 करोड़ रुपए शामिल हैं। इसके अतिरिक्त; उन्होंने जिले के विद्यार्थियों तथा युवाओं के लिए आगामी बजट में 100 करोड़ रुपए की लागत से 'रीजनल साइंस सेंटर' की मंजूरी देने के लिए मुख्यमंत्री का विशेष आभार व्यक्त किया। श्री मोढवाडिया ने कहा कि मुख्यमंत्री के समक्ष जब भी विकास की बात लेकर जाओ, तो वे सवाया देते हैं। श्री मोढवाडिया ने कहा कि राज्य सरकार की विकास कार्यों के प्रति कटिबद्धता व्यक्त की।

> **मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल**
>
> ▶▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में वर्ष 2047 तक 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने के लिए राज्य सरकार दृढ़ है
>
> ▶▶ सुदृढ़ वित्तीय प्रबंधन के चलते विकास कार्यों के लिए सरकार के पास धन की कोई कमी नहीं है
>
> ▶▶ राज्य सरकार द्वारा भव्य सांस्कृतिक विरासतों को ध्यान में रखकर पोरबंदर का सर्वांगीण विकास किया जा रहा है
>
> ▶▶ हमारी भव्य विरासत को उजागर करने वाला माधलपुर घेड का मेला आगामी रामनवमी से शुरू होने वाला है, प्रधानमंत्री के नेतृत्व में इस मेले को राष्ट्रीय सम्मान मिला है

वन एवं पर्यावरण मंत्री ने केन्द्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया के प्रयासों से जिले में जारी विभिन्न विकास कार्यों तथा राज्य सरकार की घेड की विकास परियोजना की रूपरेखा भी दी।

उन्होंने जोड़ा कि बरडा तथा घेड के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के आंतरिक सड़क मार्गों के नवीनीकरण के लिए भी करोड़ों रुपए की प्रशासनिक मंजूरी दे दी गई है, जो आगामी समय में जिले की कनेक्टिविटी में बड़ा सुधार लाएगी। वन विभाग द्वारा 20 करोड़ रुपए की लागत से तैयार होने वाले 'सर्वोदय वन' का उल्लेख करते हुए श्री मोढवाडिया ने कहा कि यह परियोजना पोरबंदर को पर्यावरण एवं पर्यटन क्षेत्र में नई पहचान दिलाएगी। उन्होंने नागरिकों को आश्वासन दिया कि सभी विकास कार्यों के गुणवत्तायुक्त होने के प्रति सरकार सतर्क है और हम पोरबंदर को एक मॉडल जिला बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

पूर्व केबिनेट मंत्री श्री बाबूभाई बोखीरिया ने कहा कि वर्ष 2001 से तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शुरू हुई विकास की प्रक्रिया राज्य सहित आज पोरबंदर में भव्य परिणाम ला रही है। श्री बोखीरिया ने मेडिकल कॉलेज, कृषि विश्वविद्यालय तथा काऊ सेंचुरी जैसी बड़ी परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में 1000 किलोमीटर से अधिक के सड़क मार्गों का जाल बिछाया गया है और शहर में पानी की समस्या के स्थायी निवारण के लिए पाइपलाइन सहित ढाँचागत विकास कार्य प्रगति पर हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि पोरबंदर अब महानगर पालिका बना है, तब आगामी कुछ वर्षों में शहर का कलेवर बदल जाएगा और वह सोमनाथ-द्वारका के बीच पर्यटन तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ पार करेगा।

प्रारंभ में जिला कलेक्टर श्री ए. डी. धानाणी ने स्वागत संबोधन में कहा कि पोरबंदर जिला पिछले कई वर्षों से विकास एवं प्रगति के मार्ग पर निरंतर दौड़ रहा है। उन्होंने प्रशासन के कामकाज का विवरण देते हुए कहा कि नगर पालिका, योजना विभाग तथा जिला खनिज कोष (डीएमएफ) जैसी विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत अनुदान प्राप्त कर लोगों की सुख-सुविधा के लिए अस्पतालों, विद्यालयों, आँगनबाड़ियों और सड़क-मार्गों जैसे बुनियादी कार्यों को प्राथमिकता दी गई है। कलेक्टर ने जोड़ा कि सोमनाथ तथा द्वारका के बीच स्थित पोरबंदर को पर्यटन, उद्योग एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे सभी क्षेत्रों में अग्रसर रखने की दिशा में सरकार एवं प्रशासन कटिबद्ध है।

उन्होंने नागरिकों के लिए काम करने के प्रति निरंतर कटिबद्ध रहने के लिए वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जनभाई मोढवाडिया सहित अग्रणियों व सरकार का आभार व्यक्त किया।

समारोह में जिला विकास अधिकारी श्री बी. बी. चौधरी, महानगर पालिका आयुक्त श्री हसमुख प्रजापति, अपर निवासी कलेक्टर श्री रेखाबा सरवैया, वन उप संरक्षक (डीसीएफ) श्री अरुण कुमार व चिराग चांदगुडे, जिला भाजपा प्रभारी डॉ. विमल कथगरा, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री चेतनाबेन तिवारी, महासचिव सर्वश्री प्रवीणभाई खोरवा, प्रवीणभाई ओडेदरा, राजेशभाई करगठिया, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष श्री रमेशभाई पटेल, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री सागरभाई मोदी, महानुभाव तथा बड़ी संख्या में शहर-जिले के नागरिक उपस्थित रहे।

एलपीजी, एलएनजी, पीएनजी और सीएनजी: गैस के प्रकार, उत्पादन और उपयोग की सरल समझ

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हमने कई गैसों के नाम तो सुने हैं, लेकिन उनके तकनीकी स्वरूप और उपयोग के बारे में हमें ज्यादा जानकारी नहीं है। इन सभी गैसों के मूल में गैस शब्द है, और फिर भी इन सभी का स्वरूप और उपयोग अलग-अलग होता है। आइए, इनके स्वरूप और उपयोग को जानें।

एलपीजी का अर्थ है द्रवीकृत पेट्रोलियम गैस:-

यह एलपीजी प्रोपेन और ब्यूटेन का मिश्रण है। प्रोपेन और ब्यूटेन को दबाव में भरकर तरल रूप में सिलेंडर में भरा जाता है। यह गैस भारी होती है, इसलिए रिसाव होने पर आसपास के वातावरण को काफी नुकसान पहुंचाती है। हमारे देश में एलपीजी का उपयोग मुख्य रूप से खाना पकाने के लिए किया जाता है। साथ ही, इसका उपयोग कुछ उद्योगों में भी होता है।नवसर्जन संस्कृत 4 1

एलएनजी का अर्थ है द्रवीकृत प्राकृतिक गैस:

यह प्राकृतिक गैस है। इसमें मुख्य रूप से मीथेन होती है। मीथेन को -162 डिग्री सेल्सियस तक ठंडा करके द्रव रूप में परिवर्तित किया जाता है, जिससे इसका आयतन 600 गुना कम हो जाता है और इसे जहाजों द्वारा लंबी दूरी तक ले जाया जा सकता है। एलएनजी का उपयोग मुख्य रूप से बिजली संयंत्रों और इस्पात उद्योगों में होता है, लेकिन इसका उपयोग उर्वरक बनाने में भी किया जाता है। हम एलएनजी के लिए कतर (एक खाड़ी देश) पर भी निर्भर हैं।

पीएनजी का अर्थ है पाइपयुक्त प्राकृतिक गैस:-

यह शुद्ध प्राकृतिक गैस है जो पाइपलाइन के माध्यम से सीधे घरों तक पहुंचाई जाती है। चूंकि यह गैस वजन में बहुत हल्की होती है, इसलिए रिसाव के बाद जमीन पर रहने के बजाय ऊपर की ओर उठती है। परिणामस्वरूप, इसका सेवन एलपीजी की तुलना में अधिक सुरक्षित है। भारत सरकार गैस आधारित अर्थव्यवस्था बनाने के लिए शहरों में पीएनजी नेटवर्क का तेजी से विस्तार कर रही है। पीएनजी वास्तव में द्रवीकृत प्राकृतिक गैस का गैसीय रूप है। इसका अर्थ यह है कि इस गैस के लिए भी हम कतर (खाड़ी देशों) पर निर्भर हैं।

सीएनजी का अर्थ है संपीड़ित प्राकृतिक गैस: –

जब प्राकृतिक गैस को बहुत अधिक दबाव पर संपीड़ित किया जाता है, तो वह सीएनजी बन जाती है। सीएनजी का उपयोग वाहनों में पेट्रोल और डीजल के विकल्प के रूप में किया जाता है। इससे प्रदूषण कम होता है और यह पेट्रोल और डीजल से सस्ता भी है। सीएनजी की बात करें तो, हम 50% आयात पर निर्भर हैं, जबकि इतनी ही मात्रा में उत्पादन हम देश में ही करते हैं। यह विभिन्न गैसों की अद्भुत दुनिया है।

सूरत में तड़के भीषण अग्निकांड और सिलेंडर धमाके से दहला कपोद्रा, दो मजदूरों की मौत, कई जिंदगी और मौत के बीच जूझते

(जीएनएस)। सूरत के कपोद्रा क्षेत्र में गुरुवार तड़के उस समय अफरा-तफरी और चीख-पुकार का माहौल बन गया, जब भरतनगर स्थित एक फैक्ट्री में अचानक लगी आग ने देखते ही देखते विकराल रूप धारण कर लिया और इसके बाद हुए गैस सिलेंडर धमाकों ने पूरे इलाके को दहला कर रख दिया। सुबह की खामोशी को चीरती तेज धमाकों की आवाज और उठती आग की लपटों ने आसपास के लोगों को भयभीत कर दिया। इस दर्दनाक हादसे में दो मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि आठ से अधिक मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए हैं, जिनमें कई की हालत नाजुक बनी हुई है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, रचना सर्कल के

पास स्थित फैक्ट्री में तड़के अचानक आग लगने की घटना सामने आई। शुरुआती क्षणों में किसी को अंदाजा नहीं था कि यह आग कुछ ही मिनटों में इतनी भयावह हो जाएगी कि पूरी इमारत को अपनी चपेट में ले लेगी। आग लगने के समय फैक्ट्री के अंदर कई मजदूर काम में जुटे हुए थे। जैसे ही आग फैली, वहां मौजूद मजदूरों के बीच भगदड़ मच गई। कई लोग बाहर निकलने के लिए इधर-उधर भागने लगे, जबकि कुछ मजदूर अंदर ही फंस गए।

स्थिति उस समय और भी भयावह हो गई, जब फैक्ट्री के भीतर रखे दो एलपीजी गैस सिलेंडरों में जोरदार विस्फोट हो गया। धमाका इतना शक्तिशाली था कि उसकी गूंज दूर-दूर तक सुनाई दी और आसपास की इमारतों तक कंपन महसूस किया गया। इस विस्फोट के बाद आग ने और भी तेजी से फैलकर पूरी बिल्डिंग को आगोश में ले लिया। देखते ही देखते लपटें आसमान को छूने लगीं और धुएं का काला गुबार पूरे क्षेत्र में फैल गया। घटना की सूचना मिलते ही सूरत अग्निशमन विभाग हरकत में आ गया। हालात की गंभीरता को देखते हुए शहर के विभिन्न सात फायर स्टेशनों से दस से अधिक दमकल गाड़ियों को तत्काल मौके पर रवाना किया गया। दमकल कर्मियों ने पहुंचते ही राहत और बचाव कार्य शुरू किया। आग की तीव्रता इतनी अधिक थी कि उसे काबू में करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। फायर टीमों ने जान जोखिम में डालकर अंदर फंसे मजदूरों को बाहर निकालने का काम शुरू किया। राहत कार्य के दौरान आठ से अधिक मजदूरों को सुरक्षित बाहर निकाला गया, जिन्हें तत्काल नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया। चिकित्सकों के अनुसार, कई घायलों की हालत गंभीर बनी हुई है और उन्हें गहन चिकित्सा इकाई में रखा गया है।

बाबा सिद्दीकी हत्याकांड में सुप्रीम कोर्ट का संतुलित फैसला, जमानत बरकरार रखते हुए कानूनी सिद्धांतों को दी प्राथमिकता

(जीएनएस)। देश की सर्वोच्च न्यायिक संस्था Supreme Court of India ने चर्चित बाबा सिद्दीकी हत्याकांड में एक महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव वाला निर्णय सुनाते हुए आरोपी आकाशदीप करज सिंह को मिली जमानत में हस्तक्षेप करने से स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया। न्यायमूर्ति J. B. Pardiwala और न्यायमूर्ति K. V. Viswanathan की खंडपीठ ने इस मामले में सुनवाई करते हुए यह रेखांकित किया कि जमानत जैसे मामलों में न्यायालय को स्थापित कानूनी मानकों और साक्ष्यों के आधार पर ही निर्णय लेना होता है, न कि केवल आरोपों या आशंकाओं के आधार पर। इस फैसले के साथ ही अदालत ने Bombay High Court द्वारा 9 फरवरी को दिए गए आदेश को बरकरार रखते हुए याचिका को खारिज कर दिया। यह मामला पूर्व विधायक और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता Baba Siddique की हत्या से जुड़ा है, जिसने महाराष्ट्र ही नहीं, बल्कि पूरे देश में कानून-व्यवस्था और राजनीतिक सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े किए थे। इस हत्याकांड में आरोपी आकाशदीप करज सिंह की गिरफ्तारी के बाद बॉम्बे हाईकोर्ट ने उसे जमानत दे दी थी। इसी जमानत आदेश को चुनौती देते हुए दिवंगत नेता की पत्नी शहजीन जियाउद्दीन सिद्दीकी ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी और आरोपी की जमानत रद्द करने की मांग की थी।

याचिकाकर्ता की ओर से यह तर्क दिया गया कि आरोपी के संबंध कुख्यात Lawrence Bishnoi Gang से हैं, जो देशभर में कई गंभीर आपराधिक मामलों में संलिप्त रहा है। वरिष्ठ अधिवक्ता नित्या रामकृष्णन ने अदालत के समक्ष यह दलील रखी कि ऐसे व्यक्ति को जमानत पर रखना न केवल न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ है, बल्कि इससे गवाहों और जांच प्रक्रिया पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस मामले की संवेदनशीलता और गंभीरता को देखते हुए जमानत आदेश को रद्द किया जाना चाहिए।

हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने इन दलीलों को पर्याप्त आधार नहीं माना। अदालत ने अपने आदेश में स्पष्ट किया कि बॉम्बे हाईकोर्ट पहले ही इस मामले में उपलब्ध साक्ष्यों की विस्तार से जांच कर चुका है और उसी के आधार पर जमानत दी गई है। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा कि जमानत रद्द करने के लिए केवल आरोप या संदेह पर्याप्त नहीं होते, बल्कि इसके लिए ठोस और नए साक्ष्य प्रस्तुत करना आवश्यक होता है, जो यह साबित कर सकें कि आरोपी जमानत का दुरुपयोग कर रहा है या न्याय प्रक्रिया को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है।

पीठ ने यह भी रेखांकित किया कि जमानत देना और उसे रद्द करना दो अलग-अलग कानूनी प्रक्रियाएं हैं। जहां जमानत देते समय अदालत आरोपी के अधिकारों, साक्ष्यों की प्रकृति और मामले की परिस्थितियों को देखती है, वहीं जमानत रद्द करने के लिए अतिरिक्त और ठोस कारणों की आवश्यकता होती है। इस मामले में ऐसा कोई नया या ठोस तथ्य सामने नहीं आया, जिससे यह साबित हो सके कि आरोपी की जमानत रद्द की जानी चाहिए। इस फैसले के जरिए सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया है कि न्यायपालिका केवल भावनाओं या सामाजिक दबाव के आधार पर निर्णय नहीं लेती, बल्कि कानून और साक्ष्यों के आधार पर ही अपना रुख तय करती है। यह निर्णय न्यायिक संतुलन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण भी है, जहां अदालत ने आरोपी के मौलिक अधिकारों और पीड़ित पक्ष की भावनाओं के बीच संतुलन बनाए रखने की कोशिश की है। इस मामले में एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि अदालत ने यह सुनिश्चित किया कि जमानत मिलने का मतलब यह नहीं है कि आरोपी निर्दोष है, बल्कि यह केवल एक अस्थायी राहत है, जो तब तक लागू रहती है जब तक कि मुकदमे का अंतिम निर्णय नहीं हो जाता। ट्रायल कोर्ट में इस मामले की सुनवाई जारी रहेगी और अंतिम फैसला साक्ष्यों और गवाहों के आधार पर ही तय होगा।

पीड़ित पक्ष के लिए यह फैसला निश्चित रूप से निराशाजनक हो सकता है, क्योंकि उन्होंने आरोपी की जमानत रद्द कराने के लिए सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था। लेकिन अदालत का यह निर्णय यह भी दर्शाता है कि न्यायिक प्रक्रिया में प्रत्येक कदम कानून के निर्धारित ढांचे के भीतर ही उठाया जाता है। यदि भविष्य में कोई नया साक्ष्य सामने आता है या आरोपी की ओर से जमानत शर्तों का उल्लंघन होता है, तो जमानत रद्द करने का विकल्प फिर से खुला रह सकता है।

यह फैसला व्यापक रूप से उन मामलों के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है, जहां जमानत और उसकी रद्दीकरण को लेकर कानूनी बहस होती है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट संदेश दिया है कि किसी भी आरोपी के खिलाफ गंभीर आरोप होना ही जमानत रद्द करने के लिए पर्याप्त नहीं है, जब तक कि उसके समर्थन में ठोस और प्रमाणिक साक्ष्य मौजूद न हों।

कुल मिलाकर, बाबा सिद्दीकी हत्याकांड में सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय न्यायिक प्रक्रिया की पारदर्शिता, निष्पक्षता और विधिक सिद्धांतों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। आने वाले समय में इस मामले की सुनवाई और उससे जुड़े अन्य पहलुओं पर देश की नजर बनी रहेगी, लेकिन फिलहाल के लिए यह फैसला न्यायपालिका की उस सोच को उजागर करता है, जिसमें कानून सर्वोपरि है और हर निर्णय उसी के आधार पर लिया जाता है।

गरवी गुजरात

हिन्दी

JioTV

CHENNAL NO.

2002

Jio Air Fiber

Jio Tv +

Jio Fiber

Daily Hunt

ebaba Tv

Dish Plus

DTH live OTT

Rock TV

Airtel

Amezone Fire

Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

बेरोजगार स्नातक

सरकारी नौकरियों की घटती संख्या, निजी क्षेत्र की जरूरतों में बदलाव, बढ़ती आबादी तथा रोजगारपरक शिक्षा के अभाव में देश में रोजगार के अवसर कम हुए हैं। कहा जाने लगा है कि अब केवल शिक्षा ही रोजगार की गारंटी नहीं रह गई है। हाल के कुछ सर्वेक्षण इस बात की पुष्टि करते हैं। पिछले दिनों इस कटु सत्य को बयां करती 'स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया 2026' रिपोर्ट आई है। रिपोर्ट बताती है कि देश में चालीस प्रतिशत युवा स्नातकों को बेरोजगार रहना पड़ता है। साथ ही उनमें से केवल सात फीसदी को ही एक वर्ष के भीतर स्थिर वेतन वाली नौकरियां मिल पाती हैं। निस्संदेह, हाल ही में सामने आए ये आंकड़े देश में रोजगार सृजन और उच्च शिक्षा तक पहुंच के बीच के असंतुलन को ही उजागर करते हैं। उल्लेखनीय है कि अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट के अनुसार, प्रत्येक वर्ष करीब पचास लाख स्नातक देश के कार्यबल में प्रवेश करते हैं। लेकिन उनमें से मुश्किल से आधे ही रोजगार पा सकते हैं। इसके साथ ही उन्हें कम सुरक्षित व कम वेतन वाली नौकरियां ही मिलती हैं। निश्चय ही दुनिया की सबसे अधिक युवा आबादी वाले देश के लिये यह सुखद संकेत नहीं कहा सकता है। अन्य शब्दों में कहें तो स्नातक होने और रोजगार के अवसरों के बीच व्याप्त असंतुलन के चलते भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश के कालांतर जनसांख्यिकीय दायित्व में तब्दील होने का खतरा पैदा हो रहा है। जिसे देश के नीति-नियंताओं को गंभीरता से लेना चाहिए। विशेषज्ञों का अनुमान है कि देश में कामकाजी उम्र की आबादी के साल 2030 से पहले चरम पर पहुंचने का आकलन है। इस स्थिति में चिंता जतायी जा रही है कि देश में युवा ऊर्जा के सदुपयोग करने का अवसर तेजी से कम होता जा रहा है। निर्विवाद रूप से यदि भविष्य में पर्याप्त और लाभकारी रोजगार के अवसर पैदा नहीं किए जाते हैं तो देश में बेरोजगारी बढ़ने से युवाओं के कुंठित होने का खतरा पैदा हो सकता है। वहीं दूसरी ओर भारतीय रोजगार परिदृश्य पर नजर रखने वाले विशेषज्ञ चिंता जता रहे हैं कि देश को शिक्षित युवाओं में लगातार बढ़ती निराशा, स्थिर आय और धीमी आर्थिक गतिशीलता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वास्तव में यहां प्रश्न केवल संख्या का ही नहीं है वरन यह रोजगार की गुणवत्ता का भी सवाल है। देश में कई स्नातक ऐसे संस्थानों से निकलते हैं, जो शिक्षकों की कमी, पुराने पाठ्यक्रम और कमजोर उद्योग संबंधों जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। विडंबना यह भी है कि देश में कुशल श्रम को रोजगार देने में सक्षम क्षेत्र, मसलन विनिर्माण और उच्च मूल्य वाली सेवाएं पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुई हैं। इसका परिणाम यह है कि डिग्री की संख्या रोजगार बाजार में मांग की संख्या के अनुपात में कहीं अधिक है। वहीं दूसरी ओर, निर्विवाद रूप से देश के रोजगार बाजार में सकारात्मक रूप से भी प्रगति के संकेत मिल रहे हैं। जाति और लिंग से जुड़ी व्यावसायिक बाधाएं धीरे-धीरे कम हो रही हैं। हालांकि, रोजगार सृजन में समांतर वृद्धि के बिना ये उपलब्धियां महत्वहीन ही होंगी। यह भी हकीकत है कि मौजूदा परिदृश्य में देश को नामांकन बढ़ाने की प्राथमिकता से हटकर रोजगार क्षमता बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित करना होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो व्यावसायिक प्रशिक्षण में निवेश बढ़ाने, उद्योग तथा अकादमिक साझेदारी को दृढ़ता देने की दिशा में काम करने तथा श्रम प्रधान क्षेत्रों को मजबूत करने की जरूरत होगी। निश्चित रूप से जब हम श्रम प्रधान क्षेत्रों को प्रभावी बनाने का प्रयास करेंगे तो रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो सकेगी। इसके साथ ही यह भी जरूरी होगा कि देश की आर्थिक नीति को तेजी से बढ़ते शिक्षित कार्यबल की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाया जाए। हमारे नीति नियंताओं के सामने चुनौती बिल्कुल स्पष्ट है कि देश की अर्थव्यवस्था में यह सुनिश्चित किया जाए कि शिक्षा का लाभ यूं ही व्यर्थ न चला जाए।

चुनावों में संयम-समझदारी दिखाएं राजनेता

> पिछले एक अर्से से हम देख रहे हैं कि हमारे नेता चुनावी मानसिकता से उबर ही नहीं पाते। कुछ कहने-करने का उनका अंदाज़ ही चुनावी हो गया है—चुनावी अर्थात् अपने विरोधी को दुश्मन की तरह देखने का अंदाज़। राजनीति का यह स्वरूप भयावह है।

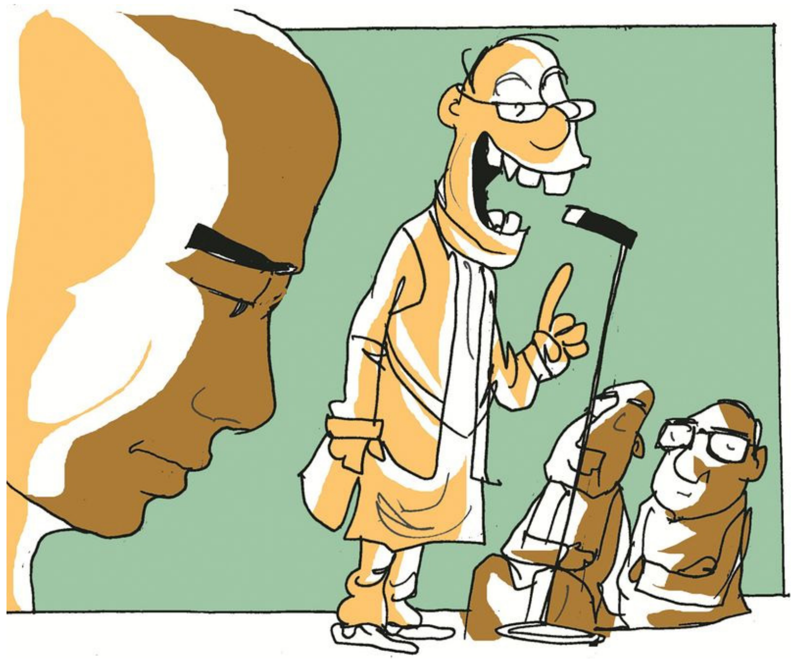

देश के पांच राज्यों में चुनावों की घोषणा हो गयी है। अब चुनाव-प्रचार में तेज़ी आयेगी। इस तेज़ी का एक मतलब नेताओं के भाषणों में तेज़ी आना है। वैसे भी, हमारे नेता, चाहे वे किसी भी दल वाले हों, बोलने में किसी से पीछे नहीं हैं, पर अब यह बड़बोलापन और उभर कर सामने आयेगा। हमारे नेता कभी भी, कहीं भी, कुछ भी बोल सकते हैं। ताज़ा उदाहरण असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा है। एक समाचार-चैनल के कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने घोषणा कर दी है कि वर्ष 2031 तक वे असम के सभी कांग्रेसी नेताओं को अपने दल, यानी भाजपा, में समाहित कर लेंगे। यह कहकर वे बताना चाहते थे कि अगले पांच साल में, वे असम राज्य को कांग्रेस-विहीन बना देंगे। दस साल पहले कुछ ऐसा ही नारा भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भी दिया था—वे देश को कांग्रेस मुक्त बनाना चाहते थे। वैसे उन्हें अधिकार है अपनी बात को अपने ढंग से समझाने का, पर सामान्य समझ यह बताती है कि इन नेताओं का लक्ष्य या उद्देश्य देश की राजनीति को एकदलीय बनाना है। हमारे जनतंत्र में ऐसा होना न तो वांछित है, न ही संभव, पर ऐसा इरादा रखनेवालों को कौन रोक सकता है?

हमारा भारत बहुत बड़ा देश है। आसेतु-हिमालय यहां अनेक धर्म हैं, अनेक विचारधाराएं हैं। देश के हर नागरिक को अधिकार है अपनी बात कहने, अपनी बात समझाने का, अपनी विचारधारा के प्रचार-प्रसार का। हर नागरिक को यह भी अधिकार है कि वह दूसरे को गलत सिद्ध करने की कोशिश करे। शर्त बस यह है कि वह यह काम तार्किक ढंग से, विवेकशील तरीके से करे-- यह सब करते हुए दूसरे के इस अधिकार को भी स्वीकारे कि उसे भी अपनी बात कहने का उतना ही अधिकार है। बात सिर्फ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की नहीं है, बात एक ऐसी व्यवस्था को भी स्वीकारने की है जिसे हमने अपने लिए चुना है।

हमारी जनतांत्रिक व्यवस्था में अलग-अलग विचारों को रहने-पनपने के अवसर हैं। हर रंग के फूल खिलें, हर फूल की अपनी गंध हो। रंग और गंध की यह विभिन्नता हमारे बगीचे का सौंदर्य है और यह विभिन्नता हमारी ताकत भी है। बनी रहनी चाहिए यह विभिन्नता, ताकि हमारी ताकत भी बनी रहे। देश में एकता का मतलब यह है कि विभिन्न धर्मों, जातियों, वर्गों का होने के बावजूद हमारे भीतर यह अहसास बना रहे कि हम सब इस देश के नागरिक हैं, देश के हित में ही हम सबका हित निहित है। इसका मतलब यह भी है कि विभिन्न विचारधाराओं का मतलब यह नहीं है कि हम एक-दूसरे के दुश्मन हैं। हम एक-दूसरे के विरोधी हो सकते हैं, एक-दूसरे को गलत मान सकते हैं, बता सकते हैं। पर हम यह कदापि नहीं चाहेंगे कि दूसरे की कीमत पर हम अपना हित साधें।

हमें एकता और एकरूपता के अंतर को पहचानना होगा। एकरूपता चाहने का मतलब है दूसरे के अस्तित्व को नकारने की कोशिश करना, जबकि एकता हमें साथ मिलकर आगे बढ़ने का अवसर देती है, अर्थ समझाती है। एकता हमें बताती है कि हमारा हित एक-दूसरे के साथ होने, साथ जीने में है, जबकि एकात्मकता का अर्थ है भिन्नता का मिट जाना। किसी अस्तित्व का इस तरह का नकार आध्यात्मिक अर्थों में भले ही आकर्षक लगता हो, पर लौकिक जीवन में यह 'अद्वैत' समस्याओं को जन्म देने वाला ही हो सकता है। 'आओ, साथ जियें', और 'मेरे साथ जीने के लिए तुम मिट जाओ' के अंतर को हमें समझना होगा। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी धर्म को मानने वाला हो, किसी भी विचारधारा का हो, अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। पर वह इसलिए अच्छा या बुरा नहीं है कि वह किसी धर्म या किसी विचारधारा को मानता है। विभिन्न विचारों, धर्मों का होने के बावजूद हम साथ रह सकते हैं, यह साथ रहना ही हमारी एकता है। एक-दूसरे को अपना मानना हमारी ताकत है।

भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जहां इतने सारे धर्म मिल-जुलकर रह रहे हैं, पनप रहे हैं। यह सही है कि सब धर्मों की अपनी जीवन-शैली और मान्यताएं हैं, और यह भी सही है कि हमारा संविधान हर नागरिक को अपने धर्म के प्रचार-प्रसार का अधिकार देता है। लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि अपने धर्म के प्रसार के नाम पर कोई दूसरे धर्म के प्रति नफरत का भाव फैलाये। अपने धर्म की विशेषताओं को बताने-समझाने का मेरा अधिकार मुझे यह अधिकार नहीं देता कि मैं दूसरे के धर्म के प्रति अनुचित शब्दों का इस्तेमाल करूं अथवा गलत भावनाएं फैलाऊं।

बहरहाल, यह एक दुखद स्थिति है कि आज देश में राजनीतिक स्वार्थ साधने के लिए धर्म के नाम पर अनुचित माहौल बनाया जा रहा है। असम के मुख्यमंत्री ने जब राज्य के सारे कांग्रेसियों को भाजपाई बनाने वाली बात कही थी तो उन्होंने 'एक को छोड़कर' शब्दों का इस्तेमाल भी किया था। उनका स्पष्ट इशारा किसी अल्पसंख्यक नेता की ओर था। धर्म-विशेष का नाम लेकर सांप्रदायिकता को हवा देने वाले इस तरह के विचार-व्यवहार के लिए जनतांत्रिक भारत में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। दुर्भाग्य की बात तो यह भी है कि धर्म के नाम पर यह वैमनस्य-भाव फैलाने की प्रवृत्ति सड़क से लेकर संसद तक फैलती दिख रही है। पिछले कुछ सालों में हमने देखा है कि अपने राजनीतिक लाभ के लिए हमारे कुछ सांसद इस संदर्भ में आपराधिक प्रवृत्ति का परिचय दे रहे हैं। यह प्रवृत्ति घातक है, और खतरनाक भी। यह भी कम बड़ी त्रासदी नहीं है कि हमारे नेता, विधायक से लेकर मंत्री तक, खुलेआम साम्प्रदायिकता फैलाने की बातें कर रहे हैं। अलीगढ़ के एक सांसद, महाराष्ट्र के एक मंत्री और एक केंद्रीय मंत्री के हालिया बयान चौंकाने वाले भी हैं, और डरावने भी। यह प्रवृत्ति रुकनी ही चाहिए।

आज, जबकि देश के पांच राज्यों में चुनाव की घोषणा हो चुकी है, और प्रचार-कार्य ज़ोर पकड़ रहा है, इस बात की आवश्यकता कहीं अधिक है कि हमारे राजनेता संयम और समझदारी का परिचय दें। वैसे तो पिछले एक अर्से से हम देख रहे हैं कि हमारे नेता चुनावी मानसिकता से उबर ही नहीं पाते। कुछ कहने-करने का उनका अंदाज़ ही चुनावी हो गया है—चुनावी अर्थात् अपने विरोधी को दुश्मन की तरह देखने का अंदाज़। राजनीति का यह स्वरूप भयावह है।

जनतंत्र भले ही बहुमत के शासन का एक स्वरूप हो, पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि बहुलतावाद हमारी राजनीति का मुख्य चेहरा बन जाये। फिर, बहुमत के शासन का यह अर्थ भी नहीं है कि अल्पमत के अस्तित्व को ही नकराने का अवसर मान लिया जाये। सच तो यह है भारत जैसे देश में बहुमत का यह कर्त्तव्य भी बनता है कि वह अल्पमत को संरक्षण दे। सवाल बहुमत के हित का नहीं, सबके हित का है। 'सबका साथ, सबका विकास' सिर्फ एक नारा बन कर नहीं रहना चाहिए। यह एक विचार है जिसे ईमानदारी से फैलाने की कोशिश होनी चाहिए। यह दुर्भाग्य ही है कि ऐसा होता नहीं दिख रहा। चुनाव-प्रचार की अवधि एक अवसर है, अपनी राजनीतिक ईमानदारी का परिचय देने का- इसे झूठ बोलने और झूठ फैलाने का अवसर बताने का मतलब जनतांत्रिक मूल्यों में अपने अविश्वास को ही जताना है।

प्रेरणा

लगातार चिंतन से जन्म लेती है खोज की ज्योति

मानव जीवन में जब भी कोई जटिल समस्या सामने आती है, तो वह केवल एक चुनौती नहीं होती, बल्कि हमारे भीतर छिपी संभावनाओं को जगाने का अवसर भी बन जाती है। इतिहास में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं जहाँ किसी व्यक्ति की जिज्ञासा, धैर्य और निरंतर प्रयास ने असंभव प्रतीत होने वाले प्रश्नों को सरल बना दिया। प्राचीन यूनान के महान वैज्ञानिक Archimedes की एक प्रसिद्ध घटना इस सत्य को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है कि जब मन किसी समस्या में पूरी तरह डूब जाता है, तो उसका समाधान भी उसी गहराई से निकलकर सामने आता है।

सायराक्यूज के राजा ने अपने लिए एक सुंदर स्वर्ण मुकुट बनवाया था। समय बीतने के साथ उसे यह संदेह होने लगा कि मुकुट बनाने वाले कारीगर ने उसमें शुद्ध सोने के स्थान पर कोई अन्य धातु मिला दी है। राजा के सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि बिना मुकुट को तोड़े उसकी शुद्धता की जांच कैसे की जाए। यह कार्य आर्किमिडीज को सौंपा गया, जिनकी बुद्धि और खोजी स्वभाव पर सभी को विश्वास था। उन्होंने इस चुनौती को स्वीकार किया और पूरे समर्पण के साथ समाधान खोजने में लग गए।

कई दिनों तक उन्होंने इस समस्या पर विचार किया। वे विभिन्न तरीकों के बारे में सोचते, गणनाएँ करते, संभावनाओं का विश्लेषण करते, लेकिन कोई निश्चित उत्तर नहीं मिल पा रहा था। यह स्थिति किसी भी विचारशील व्यक्ति के लिए अत्यंत कठिन होती है, क्योंकि जब प्रयासों का परिणाम सामने नहीं आता, तो मन में निराशा का भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। लेकिन आर्किमिडीज ने अपने धैर्य को कमजोर नहीं होने दिया। उन्होंने अपने मन को उसी समस्या में केंद्रित रखा और निरंतर प्रयास करते रहे।

यहीं पर उनकी महानता स्पष्ट होती है। उन्होंने समस्या को केवल एक कार्य के रूप में नहीं लिया, बल्कि उसे अपने चिंतन का केंद्र बना लिया। उनका मन हर समय उसी प्रश्न के इर्द-गिर्द घूमता रहता था। यही वह अवस्था होती है जब व्यक्ति का अवचेतन मन भी सक्रिय हो जाता है और वह ऐसे संकेत खोजने लगता है, जो सामान्य परिस्थितियों में नजर नहीं आते।

एक दिन जब आर्किमिडीज स्नान करने के लिए टब में बैठे, तब एक साधारण सी घटना ने उनकी सोच को नई दिशा दी। जैसे-जैसे उनका शरीर पानी में डूबता गया, उन्होंने देखा कि टब से पानी बाहर निकलने लगा। यह एक सामान्य अनुभव था, जिसे हर कोई देखता है, लेकिन उनके लिए यह एक महत्वपूर्ण संकेत बन गया। उनके मन ने तुरंत इस घटना को उस समस्या से जोड़ लिया, जिस पर वे इतने दिनों से विचार कर रहे थे। उसी क्षण उन्हें यह समझ में आ गया कि किसी वस्तु का आयतन उसके द्वारा विस्थापित किए गए पानी के बराबर होता है।

यह अनुभूति इतनी अचानक और स्पष्ट थी कि वे अपने उत्साह को रोक नहीं पाए। वे तुरंत टब से बाहर निकले और सड़कों पर दौड़ते हुए "यूरेका! यूरेका!" चिल्लाने लगे, जिसका अर्थ है "मिल गया! मिल गया!" यह केवल एक खोज की खुशी नहीं थी, बल्कि उस निरंतर प्रयास और गहन चिंतन का परिणाम था, जिसने अंततः उन्हें सफलता तक पहुँचाया। बाद में इसी सिद्धांत के आधार पर उन्होंने यह सिद्ध किया कि मुकुट शुद्ध सोने का है या उसमें मिलावट की गई है।

यह घटना हमें यह सिखाती है कि समाधान हमेशा किसी जटिल प्रक्रिया से ही नहीं मिलता, बल्कि वह साधारण अनुभवों में भी छिपा हो सकता है। फर्क केवल इतना है कि हम उसे किस दृष्टि से देखते हैं। यदि हमारा मन सजग और जिज्ञासु है, तो हम हर छोटी घटना में भी एक बड़ा अर्थ खोज सकते हैं। यही दृष्टिकोण हमें जीवन में आगे बढ़ने और नई खोजें करने के लिए प्रेरित करता है।

आज के समय में लोग अक्सर जल्दी परिणाम पाने की अपेक्षा करते हैं। वे चाहते हैं कि हर समस्या का समाधान तुरंत मिल जाए, लेकिन वास्तविकता यह है कि कई बार समाधान तक पहुँचने के लिए लंबा समय और निरंतर प्रयास आवश्यक होता है। यदि हम थोड़ी सी असफलता या देरी से घबरा जाएँ, तो हम उस महत्वपूर्ण क्षण को खो सकते हैं जब समाधान हमारे सामने आने वाला होता है।

आर्किमिडीज की यह कथा हमें यह भी बताती है कि मन को शांत और एकाग्र रखना कितना महत्वपूर्ण है। जब हम अत्यधिक दबाव में होते हैं, तो हमारी सोच सीमित हो जाती है, लेकिन जब हम सहज अवस्था में होते हैं, तो हमारा मन अधिक रचनात्मक ढंग से काम करता है। यही कारण है कि कई बार हमें अपने प्रयासों के साथ-साथ विश्राम और संतुलन की भी आवश्यकता होती है।

इस घटना से यह भी स्पष्ट होता है कि जिज्ञासा और अवलोकन की शक्ति किसी भी खोज के लिए अनिवार्य होती है। यदि हम अपने आसपास होने वाली घटनाओं पर ध्यान देना सीख जाएँ, तो हमें अनेक नए विचार और समाधान मिल सकते हैं। जीवन में हर अनुभव हमें कुछ सिखाने के लिए आता है, बस हमें उसे समझने की आवश्यकता होती है।

अंततः, यह कहानी हमें यह संदेश देती है कि निरंतर प्रयास, धैर्य और एकाग्रता के साथ कोई भी समस्या असंभव नहीं रहती। जब हम अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होते हैं और अपने मन को पूरी तरह उसी दिशा में केंद्रित रखते हैं, तो सफलता अवश्य मिलती है। आर्किमिडीज की तरह यदि हम भी अपने जीवन में जिज्ञासा और निरंतरता को बनाए रखें, तो हम हर चुनौती को एक नए अवसर में बदल सकते हैं।

इस प्रकार, यह प्रेरणादायक घटना हमें यह विश्वास दिलाती है कि समाधान कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे अपने विचारों और अनुभवों में छिपा होता है। आवश्यकता केवल उसे पहचानने की होती है। जब हम अपने प्रयासों को जारी रखते हैं और अपने मन को खुला रखते हैं, तो एक दिन अचानक वह क्षण आता है जब सब कुछ स्पष्ट हो जाता है और हम गर्व से कह सकते हैं—"मिल गया!"

ईरान की सीमाओं पर दिख रही दर्दनाक कहानियाँ, भाग जाना चाहते हैं लोग मगर पड़ोसी देशों ने दरवाजे कर रखे हैं बंद

पश्चिम एशिया और मध्य पूर्व इस समय सिर्फ युद्ध का मैदान नहीं, बल्कि इंसानी त्रासदी का सबसे खौफनाक मंच बन चुका है। ईरान पर हो रहे हमलों ने सिर्फ इमारतों को नहीं गिराया, बल्कि वहां के लोगों की जिंदगी की बुनियाद ही हिला दी है। शहरों में धुएं के गुबार हैं, सायरनों की आवाजें हैं और हर तरफ एक ही सवाल गूंज रहा है कि अब जाएं तो जाएं कहां? तेहरान से लेकर सीमावर्ती इलाकों तक, लोग अपने घर, अपनी जमीन, अपना सब कुछ छोड़कर निकल पड़े हैं। लेकिन यह कोई सामान्य पलायन नहीं है। यह मजबूरी का वह काफिला है जो हर कदम पर अनिश्चितता से टकरा रहा है। लाखों लोग अपने ही देश में विस्थापित हो चुके हैं और जो सीमा की तरफ बढ़ रहे हैं, उनके सामने नई मुश्किलें खड़ी हैं।

ईरान की सीमाएं आज खुली कम और उलझी ज्यादा नजर आ रही हैं। तुर्की की सीमा पर हजारों लोग पहुंच रहे हैं, लेकिन वहां उनका स्वागत नहीं, बल्कि रोक इंतजार कर रही है। सख्त जांच, सीमित प्रवेश और अस्थायी शिविरों की योजना यह साफ संकेत देती है कि पड़ोसी देश इस बार दरवाजे पूरी तरह खोलने के मूड़ में नहीं हैं। सीरिया संकट से मिली सीख ने उन्हें सतर्क बना दिया है।

अजरबैजान ने कुछ सीमित राहत जरूर दी है, लेकिन यह राहत चुनिंदा लोगों तक ही सीमित है। आम ईरानी नागरिक के लिए सीमा पार करना अब किसी जुए से कम नहीं। लोग कई दिनों तक सीमा के पास फंसे रहते हैं, बिना भोजन, बिना सुरक्षा और बिना किसी भरोसे के। सबसे दर्दनाक तस्वीर उन परिवारों की है जो बंट चुके हैं। कोई सदस्य सीमा पार कर गया, तो कोई पीछे छूट गया। बच्चों की पढ़ाई ठप है, अस्पतालों में संसाधनों की कमी है और बाजारों में जरूरी सामान तक मिलना मुश्किल हो गया है। लोग शहरों से निकलकर गांवों और पहाड़ों में शरण ले रहे हैं, जहां कम से कम बमों का खतरा थोड़ा कम है। हम आपको बता दें कि ईरान के भीतर हालात हर गुजरते दिन के साथ और बदतर होते जा रहे हैं। शहरों में बिजली और पानी की आपूर्ति बार बार ठप हो रही है, अस्पतालों में दवाइयों की कमी गहराती जा रही है और सामान्य इलाज तक मिलना मुश्किल हो गया है। बाजारों में जरूरी सामान या तो गायब है या आसमान छूती कीमतों पर बिक रहा है। लोग घंटों कतारों में खड़े होकर सिर्फ रोटी और ईंधन जुटाने की जद्दोजहद कर रहे हैं। बच्चों की पढ़ाई पूरी तरह ठहर चुकी है और मानसिक दबाव इतना बढ़ गया है कि हर घर के भीतर डर ने स्थायी जगह बना ली है। यह सिर्फ युद्ध का असर नहीं, बल्कि धीरे धीरे टूटती एक पूरी जिंदगी की तस्वीर है।

लेकिन असली झटका तब लगता है जब पड़ोसी देशों के रुख पर नजर जाती है। सहानुभूति जरूर है, बयान भी हैं, लेकिन जमीन पर दरवाजे बंद हैं। हर देश अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता दे रहा है। उन्हें डर है कि अगर यह लहर खुली, तो यह इतिहास का सबसे बड़ा शरणार्थी संकट बन सकती है।

यूरोप पहले से ही संभावित दबाव को लेकर चिंतित है। खाड़ी के देश पूरी तरह अलर्ट मोड में हैं। वहां हालात और भी तनावपूर्ण हैं। बहरीन में सायरन बज रहे हैं, लोगों को घरों में रहने की चेतावनी दी जा रही है। कतर और यूएई जैसे देशों में सुरक्षा इंतजाम कई गुना बढ़ा दिए गए हैं। हम आपको बता दें कि खाड़ी क्षेत्र में एक देश से दूसरे देश की यात्रा अब आसान नहीं रही। हवाई रास्तों पर खतरा मंडरा रहा है, समुद्री रास्ते तनाव से भरे हैं और हर सीमा पर सख्ती बढ़ा दी गई है। यह सिर्फ ईरान का संकट नहीं रहा, बल्कि पूरे क्षेत्र की स्थिरता को हिला देने वाला दौर बन चुका है। विशेषज्ञों की चेतावनी और भी डरावनी है। उनका कहना है कि अगर यह संघर्ष लंबा खिंचता है, तो विस्थापन का आंकड़ा विस्फोटक रूप ले सकता है। अभी जो स्थिति दिख रही है, वह सिर्फ शुरुआत हो सकती है।

देखा जाये तो ईरान एक ऐसा देश रहा है जिसने वर्षों तक दूसरे देशों के शरणार्थियों को जगह दी, लेकिन आज वही देश अपने नागरिकों को बचाने में जूझ रहा है। यह विडंबना ही है कि जो कभी शरण देता था, आज खुद शरण की तलाश में है। इस पूरे घटनाक्रम में सबसे ज्यादा पीड़ित वही आम इंसान है, जिसके पास न ताकत है, न विकल्प। सीमाएं नक्शे पर खींची जाती हैं, लेकिन उनका बोझ इंसान की जिंदगी पर पड़ता है। आज ईरान की सीमाएं सिर्फ भौगोलिक रेखाएं नहीं रह गई हैं। वे डर, राजनीति और असुरक्षा की दीवार बन चुकी हैं। लोग भाग रहे हैं, लेकिन रास्ते बंद हैं। देश खड़े हैं, लेकिन दिल बंद हैं। और सबसे बड़ा सवाल अब भी वहीं है कि क्या दुनिया सिर्फ देखती रहेगी, या कोई दरवाजा सच में खुलेगा?

अभियान

क्रोध, माया और करुणा के बीच छिपा विष्णु-नारद लीला का गूढ़ रहस्य

सनातन परंपरा में देवताओं की लीलाएँ केवल घटनाएँ नहीं होतीं, बल्कि वे गहरे आध्यात्मिक सत्य और जीवन के सूक्ष्म नियमों को प्रकट करने का माध्यम होती हैं। ऐसी ही एक अत्यंत रहस्यमयी और शिक्षाप्रद लीला है Narad Muni और Lord Vishnu के बीच घटित वह प्रसंग, जिसमें क्रोध, अहंकार, माया और करुणा का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह कथा केवल एक श्राप और उसके परिणाम की कहानी नहीं है, बल्कि यह आत्मज्ञान की यात्रा, भक्ति की परीक्षा और ईश्वर की करुणा के चरम रूप को उजागर करती है।

देवर्षि नारद, जो सदा 'नारायण-नारायण' का जप करते हुए ब्रह्मांड में विचरण करते हैं, अपने ज्ञान और भक्ति के लिए विख्यात हैं। किंतु इस प्रसंग में वे भी एक साधारण जीव की तरह मोह और अहंकार के जाल में फँस जाते हैं। एक बार वे एक अत्यंत सुंदर राजकुमारी के स्वयंवर में पहुँचे। उस राजकुमारी की अलौकिक सुंदरता को देखकर उनके मन में उसे पाने की इच्छा जागृत हो उठी। यह इच्छा धीरे-धीरे उनके भीतर आसक्ति में परिवर्तित हो गई। यही वह क्षण था जब उनकी तपस्या और वैराग्य की परीक्षा आरंभ हुई। नारद मुनि ने सोचा कि यदि उन्हें भगवान विष्णु जैसा सुंदर रूप मिल जाए, तो राजकुमारी अवश्य ही उन्हें वरण करेगी। वे तुरंत भगवान विष्णु के पास पहुँचे और उनसे प्रार्थना की कि वे उन्हें अपना स्वरूप प्रदान करें। भगवान ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया, किंतु उनकी लीला कुछ और ही थी। उन्होंने नारद को ऐसा रूप दे दिया, जो उन्हें स्वयं तो सुंदर प्रतीत हो, लेकिन दूसरों को वह वानर जैसा दिखे।

स्वयंवर में जब नारद मुनि आत्मविश्वास से भरे हुए पहुँचे, तो उन्हें विश्वास था कि राजकुमारी उन्हें ही चुनेगी। परंतु वहाँ उपस्थित लोग उन्हें देखकर हँसने लगे। राजकुमारी ने भी उन्हें उपहास की दृष्टि से देखा और अंततः भगवान विष्णु के ही रूप को वरण कर लिया, जो वहाँ एक राजकुमार के रूप में उपस्थित थे। यह देखकर नारद मुनि के भीतर क्रोध की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। उनका अहंकार आहत हो चुका था और वे स्वयं को ठगा हुआ महसूस कर रहे थे। उसी उग्र भाव में उन्होंने भगवान विष्णु को कठोर वचन कहे और श्राप दे डाला कि जिस रूप से उन्होंने उन्हें ठगा है, उसी रूप को उन्हें भी धारण करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि जैसे उन्होंने उनका उपहास कराया, वैसे ही उन्हें भी स्त्री-वियोग का दुःख सहना पड़ेगा और वानर ही उनकी सहायता करेंगे। यह श्राप आगे चलकर भगवान के Lord Rama अवतार में सत्य सिद्ध हुआ, जहाँ उन्हें सीता जी के वियोग का दुःख सहना पड़ा और वानर सेना ने उनकी सहायता की। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब भगवान विष्णु सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान हैं, तो उन्होंने इस लीला को होने ही क्यों दिया? इसका उत्तर इस कथा के गहरे रहस्य में छिपा है। भगवान अपने भक्तों को केवल सुख ही नहीं देते, बल्कि उन्हें आत्मज्ञान की ओर भी ले जाते हैं। नारद मुनि के भीतर छिपा सूक्ष्म अहंकार और मोह इस लीला के माध्यम से बाहर आया, ताकि वे उससे मुक्त हो सकें।

जब नारद मुनि ने क्रोध में आकर श्राप दे दिया, तब भगवान विष्णु ने न तो कोई प्रतिशोध लिया और न ही कोई क्रोध प्रकट किया। वे मंद-मंद मुस्कराते रहे और उस श्राप को सहज भाव से स्वीकार कर लिया। यह भगवान के उस दिव्य स्वभाव को दर्शाता है, जिसमें वे अपने भक्त के हर भाव को प्रेम से स्वीकार करते हैं, चाहे वह क्रोध ही क्यों न हो। उनके लिए भक्त का कल्याण सर्वोपरि होता है।

जब भगवान ने अपनी माया को हटा लिया, तब नारद मुनि को सच्चाई का बोध हुआ। उन्होंने देखा कि वहाँ न कोई राजकुमारी थी और न ही कोई स्वयंवर—सब कुछ भगवान की माया थी। यह देखकर उनका अहंकार चूर-चूर हो गया और वे भयभीत होकर भगवान के चरणों में गिर पड़े। उनका हृदय पश्चाताप से भर गया और उन्होंने अपने कटु वचनों के लिए क्षमा माँगी। यह क्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही वह बिंदु है जहाँ एक साधक अपने अहंकार से मुक्त होकर सच्चे भक्ति मार्ग पर अग्रसर होता है। भगवान विष्णु ने उन्हें डाँटा नहीं, बल्कि प्रेमपूर्वक समझाया कि यह सब उनकी ही इच्छा से हुआ है। उन्होंने नारद मुनि को भगवान शंकर के शतनाम का जप करने की सलाह दी, जिससे उनके हृदय को शांति प्राप्त हो सके।

यहाँ भगवान विष्णु द्वारा Lord Shiva के नामों का जप करने का निर्देश देना भी एक गहरा संकेत है। यह दर्शाता है कि सभी देवता एक ही परम सत्य के विभिन्न रूप हैं और उनकी उपासना अंततः एक ही लक्ष्य की ओर ले जाती है। यह समन्वय और एकता का अद्भुत संदेश है। इस पूरी लीला में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भगवान ने अपने ऊपर लगाए गए श्राप को भी एक अवसर में बदल दिया। उन्होंने उसे स्वीकार किया और उसे अपने अवतार की योजना का हिस्सा बना लिया। यही कारण है कि जब वे राम के रूप में अवतरित हुए, तो उन्होंने मानव जीवन की सभी परिस्थितियों का अनुभव किया—सुख, दुःख, प्रेम, वियोग और संघर्ष। इससे यह सिद्ध होता है कि भगवान अपने भक्तों के अनुभवों को स्वयं जीकर उन्हें समझते हैं।

यह कथा हमें यह भी सिखाती है कि क्रोध में लिया गया निर्णय और बोले गए शब्द कितने प्रभावशाली हो सकते हैं। नारद मुनि जैसे महान ऋषि भी जब क्रोध के वश में आए, तो उन्होंने ऐसा श्राप दे दिया, जिसका प्रभाव युगों तक रहा। इसलिए मनुष्य को अपने भावों पर नियंत्रण रखना चाहिए और किसी भी परिस्थिति में धैर्य नहीं खोना चाहिए। साथ ही, यह लीला यह भी बताती है कि ईश्वर की माया कितनी शक्तिशाली होती है। वह साधारण से साधारण व्यक्ति ही नहीं, बल्कि महान ऋषियों को भी भ्रमित कर सकती है। इससे बचने का एकमात्र उपाय है—निरंतर स्मरण, भक्ति और विनम्रता। जब तक मन में अहंकार है, तब तक माया का प्रभाव बना रहेगा।

अंततः, यह दिव्य कथा हमें यह संदेश देती है कि ईश्वर का प्रत्येक कार्य हमारे कल्याण के लिए होता है, भले ही वह हमें उस समय समझ में न आए। जब हम उनके प्रति पूर्ण समर्पण और विश्वास रखते हैं, तो वे हमें हर संकट से बाहर निकालते हैं और हमें आत्मज्ञान की ओर ले जाते हैं।

इस प्रकार, नारद मुनि और भगवान विष्णु की यह लीला केवल एक पुराणिक घटना नहीं है, बल्कि यह जीवन के गहरे सत्य को उजागर करने वाली एक दिव्य शिक्षा है, जो हमें सिखाती है कि क्रोध से विवेक नष्ट होता है, अहंकार से पतन होता है, और केवल भक्ति और विनम्रता ही हमें ईश्वर के सच्चे स्वरूप तक पहुँचाती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड
Securities and Exchange Board of India

कारण बताओ सूचना

यह सूचित किया जाता है कि बीएसई में इल-लिक्विड स्टॉक ऑप्शन्स में ट्रेडिंग करने के मामले में न्यायनिर्णयन कार्यवाहियाँ शुरू होने के बाद नोटिसियों (जिनका ज़िक्र नीचे सारणी में किया गया है) को कारण बताओ सूचनाएँ (शो कॉज़ नोटिस) जारी की गई थीं थीं। उपरोक्त कारण बताओ सूचनाएँ रिकॉर्ड में उपलब्ध पतों (अंतिम ज्ञात पतों) पर डिलीवर नहीं हो पाईं। कारण बताओ सूचनाओं के ब्यौरे नीचे सारणी में दिए गए हैं:

क्र. सं.	नोटिसी का नाम	पैन	नोटिसी का पता	सूचना (नोटिस) की तारीख एवं सं.
1.	अरिहंत इंटरनेशनल लिमिटेड (Arihant International Limited)	AAECA5555B	326 श्रीमंत मार्केट, ए.टी. रोड, गुवाहाटी, असम - 781001	22 मार्च, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-1/SBM/VS/11859/2022
2.	दिगान्ता एजेंसीज़ प्रा. लि. (Diganta Agencies Pvt Ltd)	AAECD1732F	71ए, ग्रांट लेन, दूसरी मंजिल, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700 012	8 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-8/AS/VS/36438/2022
3.	सफायर एक्सपोर्ट्स एंड एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (Saffire Exports And Agency Private Limited)	AAECS0708A	2 चर्च लेन, तीसरी मंजिल, कमरा नं. 302ए, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700 001	6 मार्च, 2024 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/EAD-8/SKV/VC/2024/08930/1
4.	प्राची ट्रेडवाइन प्रा. लि. (Prachi Tradevine Pvt Ltd)	AAFCP7889L	201, महर्षि देवेंद्र रोड, दूसरी मंज़िल, यूनिट-II, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत	08 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-8/AS/VS/36563/2022
5.	रुपी सर्विसेज़ प्राइवेट लिमिटेड (Rupee Services Private Limited)	AAFCR0056B	नीलराज 55ए भक्तिनगर सोसाइटी, मधुरम अस्पताल के सामने, धेबरभाई रोड, राजकोट, गुजरात	08 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-8/AS/VS/36568/2022
6.	प्रभात	AAGFP1439C	नूर बिल्डिंग एम.आई. रोड, जयपुर, राजस्थान - 302001 625 इंद्रपुरी, कल्लन समिति के पास, एम.आई. रोड, जयपुर, राजस्थान - 302016	04 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-8/AS/AK/38277/1/2022
7.	आसन स्टील्स प्राइवेट लिमिटेड (Asan Steels Private Limited)	AAHCA8637P	2 हरि मोहन रॉय लेन पी.ओ. टेंगरा, पी.एस. - एंटली, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, पी-19, सेक्टर - 2, अवंती विहार, रायपुर - 492 001	10 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/EAD2/NH/KL/2022/41 627
8.	एस. के. गारमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (SK Garments Private Limited)	AALCS3830L	14 15 बांगुर ऐवन्यू, ब्लॉक सी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल -700055, भारत	10 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD8/AS/AK/40343/1/2022
9.	सागरोथरका वाणिज्य प्राइवेट लिमिटेड (Sagarotharaka Vanijya Private Limited)	AAPCS4843R	द्वारा - गुड्डू राजभर, हुगली स्टेशन, आश्रम मठ, हनुमान मंदिर, पी.ओ. - नलदंगा, जिला - हुगली, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 187, महर्षि देवेन्द्र रोड, कोलकात्ता-700006.187, महर्षि देवेन्द्र रोड, कोलकात्ता-700006.	10 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD8/AS/AK/40399/1/2022
10.	नितिन जैन	ABGPJ1359J	मकान नं. डी-76, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110 015.	25 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/EAD5/AA/45937
11.	साची ओवरसीज़ (Saachi Overseas)	ABQFS9871C	प्लॉट नं. 61 मरोल को-ऑप इंडस्ट्रियल इस्टेट, साकीनाका, अंधेरी (पूर्व), मुंबई, महाराष्ट्र - 400 059. प्लॉट नंबर - 132, मरोल को-ऑप इंडस्ट्रियल इस्टेट, साकीनाका, अंधेरी (पूर्व), मुंबई - 400 059	10 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD8/AS/AK/42275/1/2022
12.	प्रभजीत सिंह चावला	ACAPC4870A	सुपुत्र - त्रिलोचन सिंह चावला, 3/51 सुरजीत निवास, रवि नगर, श्याम प्लाजा के पीछे, रायपुर - 492001	10 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD8/AS/AK/41745/1/2022
13.	लाँगव्यू सप्लायर्स प्राइवेट लिमिटेड	AABCL6956E	2/1 एवं 17/3, कृष्णा कॉम्प्लेक्स कचहरी चौक, रायपुर, (छत्तीसगढ़, भारत - 492001	22 सितम्बर, 2021 की कारण बताओ सूचना सं. सं. EAD5/MC/RM/25152/2021
14.	दिपेन दी चंदरूआ	ADZPC5855H	ए 1804 राजयोग रेजिडेंसी, एस.वी. रोड और एम.जी. रोड जंक्शन, सिटी सेंटर के पास, गोरेगाँव (पश्चिम), मुंबई,	01 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD8/AS/SM/32182/1/2022
15.	बिमला देवी किल्ला	AESPK3270J	अमरदीप बिल्डिंग 1, शरत बोस रोड, दसवीं मज़िल, फ्लैट ए, मिन्टी पार्क के पास, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700 020	03 अगस्त, 2022 की जावक डाक सं.33301/2022
16.	बिमल झा	AFDPJ4046H	59, कालीचरण घोष रोड, फ्लैट नं. K102, बिनायक एनक्लेव, कोलकाता - 700 050.	12 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD5/AA/PR/2022/42327
17.	अश्विन चुनीभाई शाह	AMXPS1436R	715, फॉर्च्यून टावर, बी.एच. स्टॉक एक्सचेंज, सयाजीगंज, वडोदरा, गुजरात - 390 005. 303 बी तक्ष कॉम्प्लेक्स, वासन रोड, वडोदरा - 390 007	1 अगस्त, 2022 की जावक डाक सं.35247/2022
18.	एम्बिशन प्लाज़ा एल.एल.पी. (Ambition Plaza LLP)	ABEFA9702G	1/1 कैमक सट्रीट, तीसरी मंझील, कोलकाता, पश्चिम बंगाल-700016.	13 सितम्बर 2023 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/EAD2/NH/RJ/2 023/38085
19.	अस्त दास	BBWPD3360C	वासुदेवपुर, मौजा - वासुदेवपुर, जे.एल.नं. 34, तारकेश्वर, हुगली 712410	18 सितम्बर, 2023 की कारण बताओ सूचना सं.SEBI/HO/EAD2/NH/RJ/2 023/39126/1
20.	राधेश्याम कुंडु	BICPK8250P	16/1/H/45/2 बिप्लबी बरीन घोष सरणी, एम.पी. रोड, कोलकाता - 700 067	18 सितम्बर, 2023 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/EAD2/NH/RJ/2023/39126/1
21.	मुकुंद दुबे	BEFPD3168A	18, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट, कोलकाता - 700 007	18 सितम्बर, 2023 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/EAD2/NH/RJ/202 3/39148/1
22.	नीतेश सिंह	DQEPS3993H	18, सर हंस पुकारी लेन, कोलकाता - 700007	18 सितम्बर, 2023 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/EAD2/NH/RJ/202 3/39148/1
23.	द ऐलनबेरीं टी कंपनी लिमिटेड (THE ELLENBARRIE TEA COMPANY LIMITED)	AAACE5769M	10/डी, साहपुर कॉलोनी, प्लॉट नं. 365, नया अलीपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700053	10 मार्च, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/LADI/LAD1_DO P4/OW/10147/1
24.	कविता डीडवानिया	ABTPA8605K	कामरूप चैम्बर रोड, फैंसी बाजार, गुवाहाटी, असम 781001	29 नवम्बर, 2021 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/IVD/ID12/OW/VRK/R P/P/2021/34658/1
25.	गायत्री देवी चौधरी	ACCPC0370P	मकान नं. 83, जालान रोड, राँची, झारखंड - 834 001	14 मार्च, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/ISD/ISD_ISD/P/O W/2022/10690/1
26.	प्लास्टिका इंडस्ट्रीज़ (PLASTIKA INDUSTRIES)	AAAFP4737H	512, हिमालय हाउस, 79 पाल्टन रोड, मुंबई, महाराष्ट्र 400 001	01 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-8/AS/VS/33096/2022
27.	एम्बलम ट्रेडलिंक प्राइवेट लिमिटेड (EMBLEM TRADELINK PRIVATE LIMITED)	AABCE9161A	37/ए, बेंटिक स्ट्रीट, पैराडाइज सिनेमा, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700069	05 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-10/SM/AD/36104/1/2022
28.	फास्टइंडोडीलर्स प्रा. लि. (FASTINODEALERS PVT LTD)	AABCF4252F	27, बिप्लबी त्रैलोक्य महाराज सरणी, सातवीं मंज़िल, नारायणी बिल्डिंग, कमरा नंबर - 703 कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700001	8 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-10/SM/138952/2022
29.	इकोस्पेस सप्लायर्स प्राइवेट लिमिटेड (ECOSPACE SUPPLIERS PRIVATE LIMITED)	AACCE9872D	156, कॉटन स्ट्रीट, तीसरी मंज़िल, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700007	05 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD-10/SM/AD/35988/1/2022
30.	परमेश्वर कमर्शियल प्रा. लि. (PARMESWAR COMMERCIAL PVT LTD)	AADCP8039L	मुनिश शाह, द्वारा - योगेश साल्ट ट्रेडर्स, श्री नगर रोड, महेश कॉलोनी, गुढ़ियारी, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492009	25 सितम्बर, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/EAD5/AA/45892
31.	रजवाड़ी रिटेल ट्रेड सिस्टम प्रा. लि. (Rajwadi retail trade Systems Pvt ltd)	AAECR4394M	294 बी, कालबादेवी रोड, पहली मंज़िल, ऑफिस नं. 07, गोविंदाडी, मुंबई, महाराष्ट्र - 400002	08 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD8/AS/VS/36484/2022
32.	ग्रैंड डीलट्रेड प्रा. लि. (Grand Dealtrade Pvt Ltd)	AAECG1630P	गुड्डु राजभर, हुगली स्टेशन, आश्रम मठ, हनुमान मंदिर, पी.ओ. - नलदंगा, जिला - हुगली, कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 712123	10 फरवरी, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/EAD/EAD4/P/O W/2022/5411/1
33.	अमृतफल मर्केंटाइल प्राइवेट लिमिटेड (Amritphal Mercantile Pvt Ltd)	AAHCA4645F	17, अर्मेनियन स्ट्रीट, कोलकाता, पश्चिम बंगाल	02 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. 36182/2022
34.	श्वेता डिडवानिया	AJUPD4183E	कामरूप चैम्बर रोड, फैंसी बाजार, गुवाहाटी, असम 781001	23 सितम्बर, 2021 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/EFD2/SAT-LIT/P/OW/2021/25530/1
35.	अरूण जगदीश डुगंरशी	AQOPD9781D	करनजुले चाल, कमरा नं. 3, एम.आई.डी.सी. रोड, राम मंदिर के पास, कैलाश नगर, अंबरनाथ (पूर्व), महाराष्ट्र - 421501	22 मार्च, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. EAD1/SBM/VS/11865/2022
36.	एस.आई.सी. स्टॉक सर्विसेज़ प्रा. लि. (SIC Stocks Services Pvt Ltd)	AAHCS8176P	501, प्रेस्टिज मेरिडियन, 2 एम.जी. रोड, बैंगलोर, भारत - 560001	02 अगस्त, 2022 की कारण बताओ सूचना सं. SEBI/HO/EAD/EAD9/P/O W/2022/33060/1
37.	रोज सिक्यूरिटीज़ लिमिटेड (Rose Securities Limited)	AADCR1312E	32, एज़रा स्ट्रीट, छठीं मज़िल, साउथ ब्लॉक, कोलकाता - 700001 पश्चिम बंगाल	26 अक्तूबर, 2021 की कारण बताओ सूचना सं. EAd-8/PM/NS/ISO-II/29966/1/2021

नोटिसियों को यह सूचित किया जाता है कि वे उपरोक्त कारण बताओ सूचनाएँ सेबी के जाँच एवं न्यायनिर्णयन विभाग (EAD) से प्राप्त कर सकते हैं जिसका पता इस प्रकार है: सेबी भवन-II, प्लॉट सं. सी-7, जी' ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व), मुंबई 400051]। नोटिसी उपरोक्त कारण बताओ सूचनाओं की प्रति सेबी की वेबसाइट (www.sebi.gov.in) से डाउनलोड कर सकते हैं, जो सेबी की वेबसाइट पर पहले ही इन शीर्षकों के अंतर्गत अपलोड करवाई जा चुकी है: प्रवर्तन (इन्फोर्समेंट) » समन / सूचनाएँ (नोटिस) जिनकी तामील नहीं हो सकी [ENFORCEMENT » Unserved Summons / Notices), या फिर नोटिसी उनकी प्रति इन ईमेल आईडी पर ईमेल भेजकर भी प्राप्त कर सकते हैं: amitk@sebi.gov.in/ dhavals@sebi.gov.in। यदि कोई जवाब आदि देना हो, तो इस सूचना के प्रकाशित होने की तारीख से 14 दिनों के भीतर दे दिया जाए।

तारीख: 13 मार्च, 2026
स्थान: मुंबई

अमित कपूर
मुख्य महाप्रबंधक

CBC 15204/11/0261/2526

सूरत में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में ऐतिहासिक पहल, पहली बार अंतरराष्ट्रीय स्तर का फैमिली थेरेपी प्रशिक्षण, देशभर के विशेषज्ञ जुटेंगे

(जीएनएस)। सूरत शहर एक बार फिर नए और प्रगतिशील सामाजिक प्रयासों के लिए चर्चा में है, जहां तेजी से बदलते सामाजिक ढांचे और पारिवारिक संबंधों में आ रहे बदलावों के बीच मानसिक स्वास्थ्य को लेकर एक महत्वपूर्ण और दूरगामी कदम उठाया गया है। शहर में पहली बार फैमिली थेरेपी का अंतरराष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जो न केवल स्थानीय प्रोफेशनल्स के लिए, बल्कि पूरे देश के मानसिक स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए एक नई दिशा तय करने वाला माना जा रहा है। यह पहल ऐसे समय में सामने आई है, जब आधुनिक जीवनशैली, व्यस्तता, डिजिटल दूरी और पारिवारिक संवाद की कमी के कारण बच्चों और किशोरों में मानसिक तनाव, व्यवहारिक समस्याएं और भावनात्मक असंतुलन तेजी से बढ़ रहे हैं। आज के दौर में परिवार केवल एक साथ रहने की व्यवस्था नहीं रह गया है, बल्कि यह भावनात्मक सुरक्षा, संवाद और मानसिक संतुलन का सबसे बड़ा आधार है। जब इसी आधार में दरारें आने लगती हैं, तो उसका सीधा असर बच्चों और युवाओं के व्यक्तित्व पर पड़ता है। विशेषज्ञों का मानना है कि पारिवारिक विवाद, संवादहीनता, पीढ़ियों के बीच अंतर और बढ़ती अपेक्षाएं मिलकर एक जटिल मनोवैज्ञानिक स्थिति पैदा कर रही हैं। ऐसे में फैमिली थेरेपी एक ऐसी वैज्ञानिक और प्रभावी पद्धति के रूप में उभर रही है, जो न केवल समस्याओं को समझने में मदद करती है, बल्कि परिवार के सभी सदस्यों के बीच संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने का मार्ग भी दिखाती है।

इन्हीं जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सूरत के एक अग्रणी मानसिक स्वास्थ्य संस्थान द्वारा इस विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह संस्थान पिछले कई वर्षों से मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं और प्रोफेशनल ट्रेनिंग के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहा है और अब तक हजारों लोगों को विभिन्न मानसिक चुनौतियों से उबरने में सहायता प्रदान कर चुका है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, जीवन के हर चरण में आने वाली मानसिक समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए यह संस्था लगातार कार्य कर रही है।

इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की खासियत यह है कि इसमें प्रतिभागियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक अनुभव और वास्तविक जीवन के केस स्टडीज के माध्यम से गहराई से सीखने का अवसर मिलेगा। सुबह से शाम तक चलने वाले इस सघन प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को परिवार के भीतर चलने वाली जटिल भावनात्मक प्रक्रियाओं, संवाद के पैटर्न और व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं को समझने की बारीकियां सिखाई जाएंगी। साथ ही यह भी बताया जाएगा कि किस प्रकार एक थेरपिस्ट परिवार के सभी सदस्यों को एक साथ जोड़कर समस्या का स्थायी समाधान निकाल सकता है।

इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता इसका अंतरराष्ट्रीय स्तर का मार्गदर्शन है। यूरोप से आईं प्रसिद्ध फैमिली थेरेपी विशेषज्ञ इस प्रशिक्षण का नेतृत्व करेंगी, जिनका इस क्षेत्र में वर्षों का अनुभव है और जिन्होंने दुनिया के विभिन्न देशों में हजारों प्रोफेशनल्स को प्रशिक्षित किया है। उनका दृष्टिकोण केवल तकनीकी नहीं, बल्कि मानवीय और संवेदनशील है, जिसमें वे हर परिवार को एक जीवंत इकाई मानकर उसके भीतर के संबंधों और भावनाओं को समझने पर जोर देती हैं। उनके मार्गदर्शन में प्रतिभागियों को वैश्विक स्तर की नई तकनीकों और दृष्टिकोणों से परिचित होने का अवसर मिलेगा। इसके साथ ही देश की अनुभवी क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट भी इस कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। अपने तीन दशक से अधिक के अनुभव के आधार पर वे प्रतिभागियों को जटिल मामलों को संभालने, सही हस्तक्षेप चुनने और प्रभावी थेरेपी तकनीकों का उपयोग करने के बारे में विस्तार से मार्गदर्शन देंगी। उनके अनुभव और व्यावहारिक समझ से प्रतिभागियों को वास्तविक परिस्थितियों में काम करने की तैयारी मिलेगी, जो इस प्रशिक्षण को और भी उपयोगी बनाता है। यह कार्यक्रम केवल सूरत या गुजरात तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से प्रोफेशनल्स भाग ले रहे हैं। कोलकाता, चंडीगढ़, बेंगलुरु और पुणे जैसे शहरों से भी मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस प्रशिक्षण में शामिल होने के लिए पहुंच रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि फैमिली थेरेपी के प्रति जागरूकता और इसकी जरूरत पूरे देश में तेजी से बढ़ रही है। साथ ही, डिजिटल माध्यम के जरिए भी इसमें भाग लेने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, जिससे दूर-दराज के विशेषज्ञ भी इस पहल से जुड़ सकें। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत जैसे देश में, जहां परिवार सामाजिक संरचना की सबसे मजबूत इकाई है, वहां फैमिली थेरेपी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि समय रहते पारिवारिक समस्याओं को समझकर उनका समाधान किया जाए, तो कई गंभीर मानसिक और सामाजिक समस्याओं को जन्म लेने से रोका जा सकता है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम इसी दिशा में एक मजबूत कदम है, जो आने वाले समय में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा। सूरत में इस तरह के अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण का आयोजन यह दर्शाता है कि अब छोटे-बड़े शहरों में भी मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बढ़ रही है और लोग इसे प्राथमिकता देने लगे हैं। यह पहल न केवल प्रोफेशनल्स को सशक्त बनाएगी, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से हजारों परिवारों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम भी बनेगी। आने वाले समय में यदि ऐसे प्रयास लगातार होते रहे, तो समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर फैली झिझक और गलतफहमियां भी धीरे-धीरे खत्म होंगी और लोग खुलकर अपनी समस्याओं के समाधान की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।

अहमदाबाद में सूरत की कला का शानदार प्रदर्शन, चार दिवसीय प्रदर्शनी में कलाकारों की रचनात्मकता ने मोहा दिल

(जीएनएस)। सूरत के उभरते और स्थापित कलाकारों की प्रतिभा इन दिनों अहमदाबाद में खास चर्चा का विषय बनी हुई है, जहां कला, संस्कृति और रचनात्मक अभिव्यक्ति का अनूठा संगम देखने को मिल रहा है। सदर्न गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की आर्ट, कल्चर और हैंडीक्राफ्ट कमेटी द्वारा आयोजित चार दिवसीय कला प्रदर्शनी का शुभारंभ 19 मार्च से हुआ, जिसने पहले ही दिन से कला प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करना शुरू कर दिया है। नवरंगपुरा स्थित सत्या आर्ट गैलरी में आयोजित इस प्रदर्शनी में सूरत के 19 प्रतिभाशाली कलाकारों की विविध कलाकृतियां प्रदर्शित की गई हैं, जो अपनी गहराई, रंगों के संयोजन और भावनात्मक अभिव्यक्ति के कारण दर्शकों के मन को छू रही हैं।

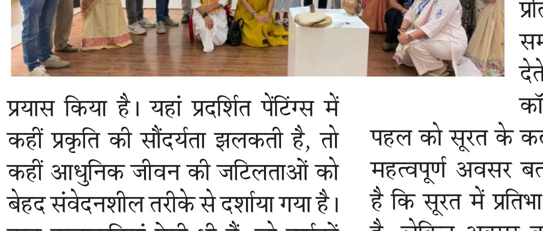

यह प्रदर्शनी केवल चित्रों का संग्रह भर नहीं है, बल्कि यह उन कलाकारों की सोच, अनुभव और कल्पनाशक्ति का जीवंत प्रतिबिंब है, जिन्होंने अपने-अपने तरीके से जीवन, प्रकृति, समाज और मानवीय भावनाओं को कैनवास पर उतारने का प्रयास किया है। यहां प्रदर्शित पेंटिंग्स में कहीं प्रकृति की सौंदर्यता झलकती है, तो कहीं आधुनिक जीवन की जटिलताओं को बेहद संवेदनशील तरीके से दर्शाया गया है। कुछ कलाकृतियां ऐसी भी हैं, जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर कर देती हैं और उनके भीतर छिपी भावनाओं को झकझोर देती हैं। प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर कला जगत की कई जानी-मानी हस्तियों की उपस्थिति ने इस आयोजन को और भी खास बना दिया। अनुभवी आर्ट क्यूरेटर, प्रसिद्ध वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर, कला गुरु और सामाजिक क्षेत्र से जुड़े कई प्रतिष्ठित लोग इस अवसर पर मौजूद रहे और उन्होंने कलाकारों की रचनात्मकता की सराहना की। इन सभी ने एक स्वर में कहा कि इस तरह के आयोजन न केवल कलाकारों को मंच प्रदान करते हैं, बल्कि समाज में कला के प्रति जागरूकता और सम्मान को भी बढ़ावा देते हैं। चैंबर ऑफ कॉमर्स के नेतृत्व ने इस पहल को सूरत के कलाकारों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर बताया। उनका मानना है कि सूरत में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, लेकिन अक्सर कलाकारों को अपनी कला को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करने का अवसर नहीं मिल पाता। ऐसे में इस तरह की प्रदर्शनी उन्हें न केवल पहचान दिलाने में मदद करती है, बल्कि उन्हें नए अवसरों और संभावनाओं से भी जोड़ती है। उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य में ऐसे आयोजनों का दायरा और बढ़ाया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक कलाकारों को इसका लाभ मिल सके।

आर्ट, कल्चर और हैंडीक्राफ्ट कमेटी की ओर से भी इस प्रदर्शनी को लेकर विशेष उत्साह देखा गया। आयोजकों के अनुसार, इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कलाकारों और कला प्रेमियों के बीच एक मजबूत संवाद स्थापित करना है, जिससे कला के प्रति लोगों की समझ और रुचि दोनों बढ़ सकें। उन्होंने कहा कि जब कलाकार सीधे दर्शकों से जुड़ते हैं, तो उन्हें अपनी कला के प्रति नई दृष्टि मिलती है और दर्शकों को भी कला के पीछे छिपे विचारों और भावनाओं को समझने का मौका मिलता है। चार दिनों तक चलने वाली इस प्रदर्शनी में हर दिन बड़ी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। यहां आने वाले विजिटर्स न केवल कलाकृतियों को देख रहे हैं, बल्कि कलाकारों से बातचीत कर उनके काम के पीछे की प्रेरणा और प्रक्रिया को भी समझने की कोशिश कर रहे हैं। यह संवाद कला को और भी जीवंत बना देता है और इसे केवल देखने की वस्तु नहीं, बल्कि अनुभव करने का माध्यम बना देता है। इस आयोजन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह सूरत और अहमदाबाद जैसे दो प्रमुख शहरों के बीच सांस्कृतिक सेतु का काम कर रहा है।

वर्ल्ड ओरल हेल्थ डे (20 मार्च): गुजरात का GDCH, अहमदाबाद बन रहा ओरल कैंसर के खिलाफ 'रक्षा-कवच', प्रिवेंटिव केयर से हजारों को मिल रहा जीवनदान

▶▶ वर्ष 2025 में 12,915 स्क्रीनिंग में 3,023 प्री-कैंसर केस की पहचान, समय रहते हजारों लोगों को कैंसर से बचाया गया

▶▶ 33 जिलों में 282 डेंटिस्ट्स का मिशन मोड अभियान, राज्यव्यापी स्क्रीनिंग और जागरूकता का मजबूत नेटवर्क

▶▶ वर्ष 2025 में GDCH अहमदाबाद में 2.24 लाख से अधिक मरीजों ने ली डेंटल OPD सेवाएँ

▶▶ मोबाइल डेंटल टीम और 45 विशेष डेंटल आउटरीच कैंपों की मदद से जेल कैदियों, गर्भवती महिलाओं और विशेष बच्चों सहित 4,980+ लाभार्थियों तक ओरल हेल्थ जाँच सेवाएँ पहुँचाई गईं

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात का गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (GDCH), अहमदाबाद आज न केवल गुजरात बल्कि पड़ोसी राज्यों के लिए भी मुख स्वास्थ्य और ओरल कैंसर की रोकथाम का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के दूरदर्शी नेतृत्व में इस संस्था ने ओरल कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी के खिलाफ एक मजबूत ढाल तैयार की है। गुजरात सरकार की 'प्रिवेंटिव हेल्थकेयर' नीति का ही परिणाम है कि आज कैंसर को उसके पनपने से पहले ही (Pre-Malignant स्टेज पर) पहचानने में बड़ी सफलता मिल रही है। यह प्रयास न केवल जीवन बचा रहा है, बल्कि स्वास्थ्य तंत्र पर पड़ने वाले दबाव को भी प्रभावी रूप से कम कर रहा है।

वर्ष 2025 में GDCH संस्थान की विशेष पहल से हुई 3,023 प्री-कैंसर केस की पहचान

वर्ल्ड ओरल हेल्थ डे 2026 के अवसर पर जारी आंकड़ों के अनुसार, GDCH अहमदाबाद ने वर्ष 2025 में ओरल कैंसर की पूर्व अवस्था यानी Pre-Malignant Diseases (PMDs) के 3,023 मामलों की पहचान की, जो वर्ष 2024 के 2,617 मामलों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाती है। शुरुआती स्तर पर इन रोगों की पहचान ने न केवल हजारों परिवारों को कैंसर के खौफ से बचाया है, बल्कि राज्य के कैंसर संस्थानों पर पड़ने वाले सर्जिकल बोझ को भी कम किया है।

स्क्रीनिंग और जागरूकता: 33 जिलों में 282 डेंटिस्ट्स का 'मिशन मोड' अभियान

मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल के मार्गदर्शन में, राज्य की NOHP (नेशनल ओरल हेल्थ प्रोग्राम) टीम और GDCH अहमदाबाद ने 'वर्ल्ड ओरल डे मन्थ' (20 मार्च से 20 अप्रैल 2025) के दौरान एक व्यापक अभियान चलाया था। इस दौरान राज्य के 33 जिलों में 282 डेंटिस्ट्स द्वारा 12,915 लोगों की सघन स्क्रीनिंग की गई। इस अभियान के दौरान 265 हेल्थ टॉक्स आयोजित किए गए, 2 वॉकथॉन निकाली गईं और 94 स्थानों पर 'तंबाकू निषेध' की शपथ दिलाई गई। साथ ही, ग्रामीण स्तर पर मुख स्वास्थ्य की निगरानी को मजबूत करने के लिए आशा (ASHA) कार्यकर्ताओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिससे कैंसर की पहचान जमीनी स्तर तक संभव हो सकी।

इसी कड़ी में, GDCH संस्थान की नियमित ओपीडी सेवाओं ने भी मुख स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता को स्पष्ट रूप से दर्शाया है। जनवरी 2025 से दिसंबर 2025 के दौरान कुल 2,24,130+ मरीजों ने डेंटल ओपीडी सेवाओं का लाभ लिया। वहीं वर्ष 2026 में भी यह रुझान निरंतर बना हुआ है, जहाँ जनवरी माह में 17,788 और फरवरी माह में 17,564 मरीजों ने उपचार प्राप्त किया। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि राज्य में लोग अब समय रहते ओरल हेल्थ के प्रति जांच और उपचार के प्रति अधिक सजग हो रहे हैं।

GDCH की 'आउटरीच' पहल: स्कूल से लेकर जेल तक पहुँच रहा अत्याधुनिक उपचार

गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (GDCH), अहमदाबाद ने अपने नियमित चिकित्सकीय कार्यों से आगे बढ़कर समाज के वंचित और दूरस्थ वर्गों तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने का सराहनीय कार्य किया है। इस पहल के अंतर्गत मोबाइल डेंटल टीम और 45 विशेष डेंटल कैंपों के माध्यम से जेल कैदियों, गर्भवती महिलाओं, बुजुर्गों और विशेष बच्चों सहित 4,980+ लाभार्थियों तक ओरल हेल्थ जाँच सेवाएँ सफलतापूर्वक पहुँचाई गईं। इस पहल की विशेषता यह रही कि एक ओर जहाँ जेल कैदियों, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों जैसे संवेदनशील वर्गों के लिए पृथक स्क्रीनिंग और उपचार की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की गई, वहीं दूसरी ओर स्कूलों में आयोजित डेंटल कैंपों में विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों को प्राथमिकता के साथ उपचार उपलब्ध कराया गया। बच्चों के दंत स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए 'पिट एंड फिशर सीलेंट' और 'फ्लोराइड वार्निश' जैसे आधुनिक प्रिवेंटिव उपचार स्कूल परिसरों में ही प्रदान किए गए, ताकि प्रारंभिक अवस्था में ही दाँतों से संबंधित रोगों और अन्य ओरल हेल्थ समस्याओं की प्रभावी रोकथाम की जा सके। वर्ल्ड ओरल हेल्थ डे के अवसर पर प्रस्तुत GDCH अहमदाबाद के ये प्रयास और उपलब्धियाँ इस बात को रेखांकित करती हैं कि यह संस्थान देश में ओरल हेल्थ केयर के क्षेत्र में एक 'रोल मॉडल' के रूप में तेजी से स्थापित हो रहा है।

उकाई नहर टूटी, खेत डूबे, किसानों की मेहनत पर पानी मुआवजे और जवाबदेही को लेकर सियासत गरमाई

(जीएनएस)। सूरत जिले के मांगरोल तालुका के कांटवा गांव के पास उकाई राइट बैंक कैनाल के अचानक टूटने से इलाके में हड़कंप मच गया और देखते ही देखते सैकड़ों एकड़ में फैली किसानों की खड़ी फसलें पानी में डूब गईं। यह घटना सिर्फ एक तकनीकी विफलता नहीं, बल्कि उन किसानों के लिए बड़ा झटका बनकर सामने आई है, जिन्होंने पूरे मौसम भर मेहनत कर अपनी फसलों को तैयार किया था। नहर के टूटते ही तेज बहाव का पानी खेतों में घुस गया और कुछ ही घंटों में हरे-भरे खेत जलमग्न हो गए, जिससे किसानों की उम्मीदें भी उसी पानी में बहती नजर आईं। घटना के बाद प्रभावित गांवों में हालात बेहद चिंताजनक हैं। कई किसानों ने बताया कि उनकी फसल पूरी तरह बर्बाद हो चुकी है और अब उनके सामने आजीविका का संकट खड़ा हो गया है। जिन फसलों से उन्हें साल भर की आय की उम्मीद थी, वे अब पानी में सड़ने के कगार पर हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यह पहली बार नहीं है जब इस तरह की घटना हुई हो, बल्कि हर साल नहरों के रखरखाव में लापरवाही के कारण ऐसी समस्याएं सामने आती रहती हैं।

इस मुद्दे ने अब राजनीतिक रंग भी ले लिया है। गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी दर्शन कुमार ए. नायक ने इस घटना को गंभीर प्रशासनिक विफलता बताते हुए राज्य सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल को ज्ञापन सौंपकर तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है और प्रभावित किसानों को उचित मुआवजा देने की अपील की है। उनका कहना है कि हर साल नहरों की मरम्मत और सुधार के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर स्थिति जस की तस बनी रहती है, जिससे यह सवाल उठता है कि आखिर यह पैसा कहां और कैसे खर्च हो रहा है।

ज्ञापन में यह भी आरोप लगाया गया है कि किसानों को सिंचाई के लिए समय पर और नियमित रूप से पानी नहीं मिल पाता, जिससे उनकी खेती प्रभावित होती है। इसके बावजूद विभागीय रिकॉर्ड में बड़े पैमाने पर मरम्मत कार्य दिखाए जाते हैं। ऐसे में नहर के टूटने की यह घटना न केवल तकनीकी लापरवाही को उजागर करती है, बल्कि पूरे तंत्र की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े करती है।

कांग्रेस नेता ने इस मामले में चार प्रमुख मांगें रखी हैं, जिनमें सबसे पहले प्रभावित किसानों को तुरंत और उचित मुआवजा देने की बात कही गई है, ताकि वे इस नुकसान से उबर सकें। इसके अलावा, इस घटना के लिए जिम्मेदार अधिकारियों और ठेकेदारों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की गई है, ताकि भविष्य में ऐसी लापरवाही दोबारा न हो। साथ ही, पिछले वर्षों में उकाई और काकरापार नहरों पर हुए खर्च की उच्च स्तरीय जांच कराने और पूरे नहर सिस्टम का स्वतंत्र तकनीकी ऑडिट कराने की भी मांग उठाई गई है।

स्थानीय किसानों का कहना है कि यदि समय रहते नहरों की सही तरीके से मरम्मत और निगरानी की जाती, तो इस तरह की घटना को टाला जा सकता था। उनका यह भी आरोप है कि कई बार शिकायतें करने के बावजूद अधिकारियों की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जाती, जिससे समस्याएं बढ़ती चली जाती हैं। अब जब यह बड़ा हादसा सामने आया है, तो किसानों को उम्मीद है कि सरकार इस बार गंभीरता से कदम उठाएगी।

प्रशासन की ओर से फिलहाल स्थिति का जायजा लिया जा रहा है और नुकसान का आकलन करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। हालांकि, किसानों की नजर अब इस बात पर टिकी है कि उन्हें राहत कब और कितनी मिलती है। इस घटना ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि बुनियादी ढांचे की अनदेखी और लापरवाही का सबसे बड़ा खामियाजा आम लोगों, खासकर किसानों को ही भुगतना पड़ता है। उकाई नहर टूटने की यह घटना केवल एक क्षेत्रीय समस्या नहीं है, बल्कि यह पूरे जल प्रबंधन तंत्र के लिए एक चेतावनी है। यदि समय रहते सुधारात्मक कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में ऐसे हादसे और भी गंभीर रूप ले सकते हैं। फिलहाल, प्रभावित किसानों की निगाहें सरकार के

GCCI और पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के साथ ओपन हाउस सत्र आयोजित

उद्योग, व्यापार और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के हितधारकों ने लिया सक्रिय भाग

(जीएनएस)। गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (GCCI) द्वारा पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के साथ एक महत्वपूर्ण ओपन हाउस सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में उद्योग, व्यापार एवं लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के प्रमुख हितधारकों ने भाग लेते हुए माल परिवहन, यात्री कनेक्टिविटी तथा लॉजिस्टिक्स दक्षता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता, अहमदाबाद मंडल, पश्चिम रेलवे के मंडल रेल प्रबंधक वेद प्रकाश ने GCCI की इस पहल की सराहना की। उन्होंने रेलवे की नीतियों, माल परिवहन कार्यक्रमों एवं अवसंरचना विकास से जुड़ी नवीनतम जानकारियाँ साझा कीं। उन्होंने अपने प्रस्तुतीकरण में बताया कि किस प्रकार भारतीय रेलवे को विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ विकसित किया जा रहा है। गुजरात में रेलवे बजट में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा वंदे भारत एक्सप्रेस और मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना जैसे प्रोजेक्ट राज्य के विकास में नए आयाम स्थापित कर रहे हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए GCCI के अध्यक्ष संदीप इंजीनियर ने भारत को 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में रेलवे की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने औद्योगिक विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए लॉजिस्टिक्स दक्षता में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर GCCI के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेश गांधी, उपाध्यक्ष अपूर्व शाह एवं कोषाध्यक्ष गौरांग भगत भी उपस्थित रहे।

GCCI लॉजिस्टिक्स टास्कफोर्स के चेयरमैन हितेन वसंत ने लॉजिस्टिक्स प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत करने में रेलवे की भूमिका को रेखांकित करते हुए वैगन उपलब्धता, अवसंरचना विकास एवं डिजिटल एकीकरण जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता बताई। सत्र में रेलवे अधिकारियों की उपस्थिति वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अन्नू त्यागी, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक डॉ. ज़ेनिया गुप्ता तथा वरिष्ठ मंडल यांत्रिक अभियंता (समन्वय) जगदंबा प्रसाद भी उपस्थित रहे।

ओपन फोरम के दौरान माल परिवहन, पोर्ट कनेक्टिविटी एवं यात्री सेवाओं से जुड़े मुद्दों पर सक्रिय चर्चा हुई, जिससे उद्योग और रेलवे के बीच सहयोग को और मजबूत करने की प्रतिबद्धता सामने आई।

बढ़ते निर्यात एवं लॉजिस्टिक्स डिमांड को देखते हुए समयबद्ध और विश्वसनीय रेल कनेक्टिविटी अत्यंत आवश्यक है, जिसे GCCI और रेलवे के बीच सतत संवाद एवं समन्वय के माध्यम से और बेहतर बनाया जा सकता है।

मंडल रेल प्रबंधक ने व्यापारियों एवं उद्यमियों से प्राप्त सुझावों और समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए तथा आश्वासन दिया कि सभी वाजिब मुद्दों का शीघ्र समाधान किया जाएगा।

भावनगर मंडल से होकर चलने वाली 5 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरों का विस्तार

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा एवं बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर मंडल से होकर संचालित 5 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरों को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:

1.ट्रेन संख्या 09207 बांद्रा टर्मिनस–भावनगर साप्ताहिक स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, जिसे अब 31 जुलाई, 2026 तक संचालित किया जाएगा। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09208 भावनगर–बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 26 मार्च, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, जिसे अब 30 जुलाई 2026 तक संचालित किया जाएगा।

2.ट्रेन संख्या 09211 गांधीग्राम–बोटाद दैनिक स्पेशल एवं 09212 बोटाद–गांधीग्राम दैनिक स्पेशल दोनों को 31 मार्च, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, जिसे अब 31 जुलाई, 2026 तक संचालित किया जाएगा।

3.ट्रेन संख्या 09216 भावनगर–गांधीग्राम दैनिक स्पेशल एवं 09215 गांधीग्राम–भावनगर दैनिक स्पेशल दोनों को 31 मार्च, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, जिसे अब 31 जुलाई, 2026 तक संचालित किया जाएगा।

4.ट्रेन संख्या 09529 धोला–भावनगर दैनिक स्पेशल एवं 09530 भावनगर–धोला दैनिक स्पेशल दोनों को 31 मार्च, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, जिसे अब 31 जुलाई, 2026 तक संचालित किया जाएगा।

5.ट्रेन संख्या 09018 वेरावल–बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 30 मार्च, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, जिसे अब 27 जुलाई, 2026 तक तथा ट्रेन संख्या 09017 बांद्रा टर्मिनस–वेरावल साप्ताहिक स्पेशल को 29 मार्च, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, जिसे अब 26 जुलाई, 2026 तक संचालित किया जाएगा।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे यात्रा से पूर्व ट्रेनों के समय, ठहराव एवं संरचना की जानकारी के लिए भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

आरक्षित ट्रेनों के लिए टिकटों की बुकिंग 20 मार्च 2026 (शुक्रवार) से यात्री आरक्षण केंद्रों एवं IRCTC की वेबसाइट पर प्रारंभ होगी। यात्रीगण ट्रेनों के समय, ठहराव एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

युवाओं के लिए केन्द्र सरकार के 'वीबी-जी राम जी यूथ डिजिटल कैम्पेन' में भाग लेकर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का स्वर्णिम अवसर

▶▶ लोगो डिजाइन प्रतियोगिता के विजेता को 50 हजार रुपए का आकर्षक पुरस्कार तथा डिजिटल प्रमाणपत्र

▶▶ 'My Bharat' पोर्टल के माध्यम से युवा गाँव की प्रगति की गाथा देश के समक्ष प्रस्तुत कर सकेंगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा देश के ग्रामीण युवाओं की शक्ति तथा सृजनात्मकता को वेग देने के लिए 'My Bharat' पोर्टल के सहयोग से राष्ट्रव्यापी 'वीबी-जी राम जी यूथ डिजिटल कैम्पेन' की घोषणा की गई है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन तथा स्थानीय आजीविका के प्रयासों में युवाओं को डिजिटल माध्यम से जोड़कर राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनाना है।

इस अभियान के द्वारा युवा अपने गाँव के विकास कार्यों, नवीन प्रयोगों तथा बुनियादी स्तर पर आने वाले सकारात्मक परिवर्तनों को वीडियो व डिजाइन के माध्यम से प्रस्तुत कर सकेंगे। 15 से 29 वर्ष आयु समूह के सभी उत्साही युवा 20 मार्च, 2026 तक 'My Bharat' अथवा 'MyGov' पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन पंजीकरण करा सकेंगे।

अभियान अंतर्गत आयोजित प्रमुख प्रतियोगिताएँ

वीडियो चैलेंज (रील प्रतियोगिता)

गाँव में हुए विकास कार्यों अथवा आजीविका से संबंधी 30 से 60 सेकंड का प्रभावशाली शॉर्ट वीडियो बनाकर 'My Bharat' पोर्टल पर अपलोड करना होगा। फाइल साइज अधिकतम् 25 एमबी होना अनिवार्य है।

ऑनलाइन क्विज

'विकसित भारत – जी राम जी एक्ट 2025' तथा सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं पर आधारित 20 प्रश्नों के उत्तर देकर युवा आकर्षक डिजिटल प्रमाणपत्र प्राप्त कर सकते हैं।

लोगो डिजाइन प्रतियोगिता

इस योजना के उद्देश्यों को सार्थक करने वाले श्रेष्ठ लोगो को बनाने वाले युवा विजेता को 50 हजार रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

यह अभियान केवल युवाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म ही नहीं प्रदान करेगा, बल्कि ग्रामीण भारत की प्रगति को नई पहचान देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। अधिक जानकारी के लिए जिला ग्रामीण विकास एजेंसी की मनरेगा शाखा से संपर्क करने को कहा गया है।

"ऑपरेशन डिग्निटी"

अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से 30 असहाय शहरी बेघरों का रेस्क्यू

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा यात्रियों की सुरक्षा, स्वच्छता एवं मानवीय संवेदनाओं को ध्यान में रखते हुए दिनांक 18 मार्च, 2026 को अहमदाबाद रेलवे स्टेशन परिसर में "ऑपरेशन डिग्निटी" केअंतर्गत विशेष अभियान चलाया गया।

इस अभियान का संचालन रेलवे सुरक्षा बल (RPF) के स्टाफ तथाअहमदाबाद नगर निगम द्वारा संचालित शहरी बेघरों के आश्रय (Shelter for Urban Homeless) के कर्मियों के संयुक्त सहयोग से किया गया।

अभियान के दौरान स्टेशन परिसर से कुल 30 असहाय शहरी बेघरोंको चिन्हित कर सुरक्षित रूप से रेस्क्यू किया गया। सभी व्यक्तियों कोआवश्यक समन्वय के साथ अहमदाबाद नगर निगम के शहरी बेघरों केआश्रय स्थल (SUH) में आश्रय एवं देखभाल हेतु स्थानांतरित किया गया।

यह पहल रेलवे परिसर में व्यवस्था बनाए रखने के साथ-साथ समाजके कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का परिचायक है।पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मंडल भविष्य में भी ऐसे मानवीय एवंजनहितकारी अभियानों को निरंतर जारी रखेगा।

सोना वायदा 5813 रुपये और चांदी वायदा 15239 रुपये लुढ़का: क्रूड ऑयल वायदा में 37 रुपये की नरमी

(जीएनएस)। मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 267468.12 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 50880.88 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 216585.8 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मार्च वायदा 36400 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3903.76 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 35285.43 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 151941 रुपये के भाव पर खूलकर, 152449 रुपये के दिन के उच्च और 146757 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 153025 रुपये के पिछले बंद के सामने 5813 रुपये या 3.8 फीसदी गिरकर 147212 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-गिनी मार्च वायदा 4775 रुपये या 3.81 फीसदी गिरकर 120410 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-पेटल मार्च वायदा 612 रुपये या 3.89 फीसदी गिरकर 15107 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर पहुंचा। सोना-मिनी अप्रैल वायदा 152220 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 152666 रुपये और नीचे में 146861 रुपये पर पहुंचकर, 5808 रुपये या 3.79 फीसदी गिरकर 147300 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-टेन मार्च वायदा प्रति 10 ग्राम 153047 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 153370 रुपये और नीचे में 145004 रुपये पर पहुंचकर, 153886 रुपये के पिछले बंद के सामने 6012 रुपये या 3.91 फीसदी गिरकर 147874 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा 245000 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 245674 रुपये और नीचे में 229234 रुपये पर पहुंचकर, 248194 रुपये के पिछले बंद के सामने 15239 रुपये या 6.14 फीसदी घटकर 232955 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 15584 रुपये या 6.14 फीसदी औंधकर 238113 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 15647 रुपये या 6.16 फीसदी घटकर

▶▶ कमोडिटी वायदाओं में 50880.88 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 216585.8 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर: सोना-चांदी के वायदाओं में 35285.43 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार: बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 36400 पॉइंट के स्तर पर

238291 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

मेटल वर्ग में 5103.55 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मार्च वायदा 44.9 रुपये या 3.89 फीसदी घटकर 1108.1 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता मार्च वायदा 4.85 रुपये या 1.54 फीसदी गिरकर 309.15 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इसके सामने एल्यूमीनियम मार्च वायदा 5.7 रुपये या 1.66 फीसदी औंधकर 337.6 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मार्च वायदा 35 पैसे या 0.19 फीसदी चढ़कर 187.9 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 10315.80 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मार्च वायदा 9357 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 9357 रुपये और नीचे में 8802 रुपये पर पहुंचकर, 37 रुपये या 0.41 फीसदी घटकर 8961 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मार्च वायदा 45 रुपये या 0.5 फीसदी गिरकर 8965 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 288 रुपये के भाव पर खूलकर, 302 रुपये के दिन के उच्च और 288 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 283.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 13.9 रुपये या 4.91 फीसदी की बढ़त के साथ 297.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मार्च वायदा 13.7 रुपये या 4.83 फीसदी की बढ़त के साथ 297.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 964 रुपये के भाव पर खूलकर, 2.4 रुपये या 0.25 फीसदी की मजबूती के साथ 970 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 23636.83 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 11648.59 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 3962.35 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 699.80 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 16.39 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 417.48 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 7591.12 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2701.85 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 3.80 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन कैंडी के वायदाओं में 2.06 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 10941 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 62944 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 32345 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 456398 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 67137 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7868 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 21267 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 83665 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 26512 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 25222 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मार्च वायदा 37301 पॉइंट पर खूलकर, 37301 के उच्च और 36400 के नीचले स्तर को छूकर, 1117 पॉइंट घटकर 36400 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अप्रैल 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 32.7 रुपये की बढ़त के साथ 1042.1 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 6.6 रुपये की बढ़त के साथ 12.35 रुपये हुआ।

सोना मार्च 155000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 895.5 रुपये की गिरावट के साथ 342 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 4915 रुपये की गिरावट के साथ 2636.5 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1150 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 12.3 रुपये की गिरावट के साथ 5.26 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 71 पैसे की नरमी के साथ 0.88 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अप्रैल 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 5.6 रुपये की बढ़त के साथ 1032.1 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.25 रुपये की गिरावट के साथ 5.7 रुपये हुआ।

सोना मार्च 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 456.5 रुपये की बढ़त के साथ 638.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 810 रुपये की बढ़त के साथ 1220.5 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 13.66 रुपये की बढ़त के साथ 16.4 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 305 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 64 पैसे के सुधार के साथ 1 रुपये हुआ।